धारणा ग्राम जाले मे यात्रा मेता कुलर तनीवा ॥ फिर
प्रथम तो नक्षत्र लदेखणा ॥ फेर योगिनी देखणी ॥ फेर
चक्र देखणा फेर म स्यु योग देखणा नंदास्वरूप मे गले
क्षा वासे फेर चंद्रमा उस की राशि स देखणा ४ ॥ ८ ॥ र
नाहो ॥ फेर रिक्ता तिथि ना हो यह देखणा ॥ और स्थिर लग्न
देखणा ॥ [illegible] ॥ और जो बडी यात्रा होवे
तो थी यात्रा क्यो कोई व्यवहार करणे को बहुत दूर जावे
हलाभ यात्रा होती है और एक [illegible] यात्रा राजमके
बहुत बडा हो [illegible] को जि [illegible] त लेणे का मनोर
थ हो यह [illegible] यात्रा है इस के मुहूर्त पत्र २५ से २७ त दावी
लिखे है प्रथम प्रस्थान ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ करणा फेर जा
[illegible] ज्योतिस्सार सारि लिख्यते भाषानुवाद ॥
त्रा करणी इस के मुहूर्त मे नेत्रके [illegible] देखणा चाहिये । [illegible]

[illegible] धातु से यात्रा सिद्ध होता है ॥ [illegible] यात्रा मे
[illegible] जो [illegible]
होवे तो योगिनी [illegible] देखणी

श्रीगणेशाय नमः॥ जन्मराशिसे इतने कार्य करने औ
र नामराशिसे इतने कार्य करने॥ विवाहे सर्व मांग
ल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे जन्मराशेः प्रधानत्वं ना
मराशिं न चिन्तयेत॥१॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवा
यां व्यवहारके नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशे
रतः परम्॥२॥ काकिण्यां वर्ग मैत्री च गाढे
द्यूते स्वरोदये मंत्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्र
धानता॥३॥ अर्थ देशके कार्य मे ग्राम के कार्य
मे गृह के कार्य मे युद्ध मे नौकरी मे व्यव
हार मे नामराशि की प्रधानता है नामरा
शि मुख्य है और २ अन्य कार्य मे जन्मराशि
मुख्य है॥ प्रसिद्धं जन्मनं न स्यात् नामभे परिक
ल्पना तेनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादि जन्म
वत्॥१ जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्ये
न नामभम्॥ व्यत्ययेन यदा योज्यं दंपत्यो
र्निधनप्रदम्॥२॥ यह वाक्य विवाह प्रकरण मे
मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा मे है॥ विवाह मे
२१ दोष तिरवे है परन्तु मुख्य तो १० ही दो
ष है॥ दश दोष यह है॥ वेध मृत्ता चैव पात
पातः खार्जूर योगो दश योग चक्रम्॥ प्रति
[illegible] नामदोष [illegible] लक्षण [illegible]
[illegible] चैव दोषाः॥ अर्थ [illegible] और [illegible]
[illegible] से उप [illegible]
[illegible] तब चन्द्रमा क्षीण हो जाता है॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मुहूर्तचिन्तामणौ विवाहप्रकरणम् ॥ न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा ॥ आद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः ॥ भाषाटीका ॥ आद्य गर्भके बालक वा कन्या जेठा बालक होवे जेठी कन्या होवे तिनका विवाह जन्मके मासके विष जन्मनक्षत्रके विष जन्मतिथिके विष जन्मके वारके विष विवाह जो है सो श्रेष्ठ नहीं है जो बालक कन्या आद्यगर्भके नाहीं वा जेठे नाहीं तो विवाह करनो शुभ है पुत्रपौत्र के देने वाला है यह आद्यगर्भका ही निषेध है अन्यका नहीं ॥ ज्येष्ठद्वंद्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाहुर्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ भाषाटीका ॥ पुत्र भी जेठा हो कन्या भी जेठी होवे और [illegible] ज्येष्ठका महिना होवे तो विवाह करनो श्रेष्ठ नहीं है ॥ औ उक्तं च वसिष्ठ वाक्य ॥ द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तौ एक ज्येष्ठः शुभावहः ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहे सर्वसंमतम् ॥ भाषा ॥ दो ज्येष्ठ मध्यम है एक ज्येष्ठ [redacted] शुभ है तीन ज्येष्ठ नेष्ठ हैं ॥ वसिष्ठ गर्गः ॥ ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य कुर्वीत भास्करे चानलस्थिते नोत्सवादीनि कार्याणि जन्मानि च वर्जयेत् ॥ भाषाटीका ॥ आवश्यक मे परिहार यह है के चित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाहुरिति ॥ अथ सूर्यको वह्नि कृतिकानवद्दक

मुहूर्तगणपतौ [illegible] ऐसे मुहूर्त लिखा है के जो कृतिका नक्षत्रके उपर सूर्य [illegible] मासभी वर्जित है [illegible] कृतिके बिना ही ॥ उक्तं च नेष्ठं त्रि

उपर स्थित गुरु वेध से सूर्य को ग्रसित तु कृतिका न दे
उपर स्थये हो तिस को त्याग कर ज्येष्ठ मास में भी
ज्येष्ठ वर कंन्या का विवाह करना शुभ है वह को
दश दिन वर्जयेद्
ई कै [illegible] वि: कहते हैं मार्ग शीर्ष तथा ज्येष्ठ वि
[illegible] के न मे च ज्येष्ठ पुत्र दुहिता च न कु
र्वीत ते तत चैत्र [struck through] हो तिस को
[struck through] करना ॥
सुतपरिणयात्म ष्मासांतः सुता करवीं उनम न च
निज कुलेत तद्वत् मंडनात् पिमंडन मून च सहज
यो र्दै वे भ्रातो: सहोदर कन्यके न सहज सुतो भूते
5 ब्दार्धे शुभे न विभिन्न ल्कि पा ॥ भाषा टीका ॥ पुत्र
के विवाह से उपरांत कंन्या पति कंन्या का विवा
ह छ महिने तक न करना ॥ नारद ॥ पुत्री
मुद्वाह्य पुत्रो विवाहेन कृ तु त्रये कुर्यान्न [illegible]
मुद्वाहान् [illegible] गं ल्लेना व मंगल मृ ॥ मंडन ते विवाह मु
दि शुभ कार्य ते म [illegible] जो होरहे सो नहि करना
छमास [illegible] हि ने तक नहि करना पुत्र के विवा
ह से उपरांत ॥ [illegible] ना [illegible] का
इति जो वर्ष का में [illegible]
तं नियम
वी च मे नोट बन हि [illegible]

सेउपरांत पुत्रि का विवाह कर लेना और मुंडन भी करलेना। अब कैभेद से। दोनो सगे भाइयों का दोनो सगी वहनों की साथ विवाह नहिं करना उक्तं चनारदेन॥ न चैकजन्मनोः पुंसोरे कजन्मेत कन्य कन्ये कदाचिदु द्वहे मैकन्दा मुंडन छ यमूइति॥ दोनो सगे भाइयों का एक साथ मुंडन भी नहिं होता और विवाह भी दोनों सगी व हनो की साथ [illegible] नहिं करना दोनो सगे भाइ यों की साथ॥ अथ विवाह लग्न निर्णय:॥ व्ययेष्ट नि:स्वे [illegible] वनिवस्त ती भेष्ट भौ गसनै चंद्र ख लान पापाः लग्ने ट क गिल्लौ व्यय रिपोमृती गलौ लैस्मेट शुभाः व्ययदेचसर्वे॥ भाषा टीका॥ वि वाह जो लग्न विवाह का निश्चय करना होतो इस श्लोक से करना सो इस श्लोक का यह अर्थ है जिस लग्न में सूर्य उदय होते उस लग्न से सप्तम लग्न में अस्त होता है उसी सप्तम लग्न से जो चंद्रमा दूसरे चौथे सातवें पांचवे [illegible] वें घर में स्थित हो तो उसको शोध लिया करते हैं॥ द्विगणाव्ययगते चंद्र

गोधूलि प्रशस्तमता । इस वाक्य से गोधू
लिक लग्न बनता है जो चंद्रमा सप्त
म लग्न से ॥२।३॥११॥ ना हो तो गोधूलि
क लग्न नहिं बनता है ॥ जो रात्रि भर
मे कोई लग्न नहिं बनता हो तो गोधूलि
क लग्न का नाश किया है सो वाक्य
लिखते हैं । वो ह गोधूलिक लग्न जो विहि
त ज्योत मुहूर्त चिंतामणि के इस श्लोक से चं
द्रमा ।२।३।११। है जा हो सो कलिखते हैं
यत्रैकादशगश्चंद्रो द्वितीयो वा तृ
तीयगः गोधूलिकस्तु विज्ञेयो वधू
बाधूलिरितिस्मृता ॥ इस वाक्य से गोधू
लिक लग्न देखना ॥ जो लग्न कोई न
हिं बने तो गोधूलिक करना इस मे वाक्य
लिखते हैं ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धं मन्य
द्गोधूलिकं साधु तदा वदंति लग्ने विशु
द्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं
विधत्ते भाऽभूत सर्वं एवादै
वं त्वनिंदितम् विवाह लग्न छु क्यो

धूलिंप्राहभार्गवः ।। घटीलग्नं वदन्मालि
तदगोधूलिकंशुभम वदन्तीबुधाः
प्राहुर्नद्विजानांकदाचनमहादोषामरि
त्यज्यप्रोक्तधिषणादिके [illegible] तुचका
रके क्षैर जोपाव तावल्लग्नंशुभावह
म ।। लग्नशुद्धिर्यदानास्तिकन्यायौवनशा
लिनीतदाकै वैसर्ववर्णानामूलग्नंगो
धूलिकंशुभम ।। विप्रपचाटिकालाभ
दातवंगोरजोवधैः संकीर्तिगोरजःप्र
संपरेप्रद्धितयंशुभम ।। इसवाक्योंसेजो
रात्रिभरमेकोई और लगनवाताहोतोगोधू
लिकलग्नम [illegible] हिंकरनागोधूलिकलगनतो
लगनहैकेअभावमेकरनालिखाहै और
अ॰ वगोधूलिकलगनकाकालयामेणख
तलिखतेहैं ।। तथाचश्लोकः ।। पिंडीभूते
दिनकृतिहेमंततौस्यादर्धास्तेतपसमये
गोधूलिःसंपूर्णास्तेजलधरमालाकु
लेत्रेधासोज्यासकलनमेकार्या ।।
भाषाटीका ।। मार्गशीर्ष ।। पौष ।। माघ ।। का
लगनइनमहिनोंमेसूर्यअस्तार्धकालके

जब विंदुभ्रता कार होवे गोलमहोत
व गोधूलि कलग्न होता हैं ॥ और चै
त्र वैशाख ज्येष्ठ । मास ६ इन महि
नो मे सायंकाल को सूर्य । आधा
अस्त होगया हो । और । आषाढ माह
र हो उस काल मे गोधूलि कल
ग्न होता है ॥ और श्रावण भाद्र
द । आश्विन कार्तिक इन महिनों
मे सायंकाल को सूर्य संपूर्ण । अ
स्त हो जावे उस काल मे गोधू
लि कलग्न होता है ॥ इति गोधूलि
कलग्न निर्णय ॥ गोधूलि कलग्न
से । अगले लग्न को विचार कर देखे
१२ व्यपेषानिले इस श्लोक से जो लग्न निर्ण
य मे अशुद्ध हो सो करले ॥ अब व्यपेषानिल
इसका यह । अर्थ है जो लग्न देखना है
उससे प्रथम सप्तम भान को शुद्ध देख
ना उससे प्रथम घर मे कोई ग्रह ना हो

5

और दुवदृश भाग मे शनि नाहीं और
दशम भाव मे मंगल ना हो के और त्र
तीय भाव मे गुरु ना हो और चंद्रमा
लग्न के विषय ना हो और खलपाप ग्र
ह क्रूर ग्रह ना हो शनि राहु के तु वह पा
प ग्रह ना हैं सूर्य मंगल यह क्रूर ग्रह
ना हैं और लग्न का स्वामि और ल
ग्नि अष्ट और चंद्रमा यह ष ८ भाव
मे ना हैं और चंद्रमा के और शु
भ ग्रह चं. बु. शु. गु. यह शुभ ग्रह
और आर मंगल यह अष्टम भाव
मे ना हो और सप्तम भाव मे सर्व ग्र
ह वर्जित है ॥१॥ और कोई कन्या चा
वे सप्तम भाव मे चंद्रमा विष स्पति को स
म करहै तो हैं ना गुण ना ने ८ गर्गवृहस
मौ इति वचनात "इतं वचन से ॥ जो मि लग्न
लग्न ... वर कि जन्म राशि से अष्टमा
कन्या कि जन्म राशि से अष्टम वर कौ

न्या के जन्म लग्न से ८ अष्टम हो तो
वोह लग्न नहिं करना ३ ऊंच

जन्मलग्नभयोर्म्रत्युराशौ नेष्टः कर
ग्रहः। एकाधिपत्ये राशीशमैत्रे वा
नैव दोषकृत्॥१॥ जन्म लग्न वा ज
न्मराशि से ८ अष्टम राशि के विष
कर ग्रह विवाह नेष्ट है और जो
विवाह लग्न का और वर कंन्या के
जन्म लग्न का वा जन्म राशि का
स्वामि एक हो अथवा परस्पर मित्र
ता हो तो दोष नहि है॥ जो विवाह लग्न
मे व्यये स्थान वे इस श्लोक से जो कोई
विवाह लग्न मे दोष हो जावे तो त्रिकोण
केंद्र वा इस श्लोक के परिहार से लग्न
कर लेना। अब श्लोक लिखते है

त्रिकोणे केंद्रे वा मदनरहिते दोषशतकं हरेत्सौम्यः शुक्रो
द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः भवेदाये केंद्रेऽगपउतल
वे क्षोयदितदा समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमय
ति॥१॥ भाषाटीका॥ जो विवाह लग्न से केंद्र स्था
नमे वा त्रिकोण स्थानमे वृहस्पति वा शुक्र वा बुध

इन मे से कोई भी अरुव ऽ जावे तो सभ लग्न के दोषों
को नष्ट कर देते हैं वो ह लग्न कर लेना ॥ इति विवा
ह लग्न विचारः ॥ अथ गृहारम्भ गृहप्रवेश मुहूर्तः
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गृहारम्भ मुहूर्त लिखते
हैं ॥ कुंभेऽर्के फाल्गुने प्रागपर मुखगृहं श्रावणे
सिंह कर्क्योः पौषे नक्रे च याम्योत्तर मुखसद
नं गोऽजगेऽर्के च राधे माऽर्जेऽलिका लिग सम शुभ म
प्युदगसत् स्यात् तुलाम्युक्ते पुष्येः स्तीगेह त्वहि
ग्रो हरि भ भिधि मनो सत्न गृहा सः सर्वे दाः ॥
भावार्थ का कुंभ के सूर्य मे पूर्व और पश्चिम मषि तरफ
फ को द्वार बनाना शुभ है ॥ और सिंह कर्क मक
र इन के सूर्यों मे पूर्व और पश्चिम मषि तरफ
द्वार करना ॥ और मेष वृषभ के सूर्यों मे और
तुला वृश्चिक के सूर्य मे दक्षिण वा उत्तर कि तरफ
द्वार करना शुभ है और मिथुन कन्या धन मीन इ
न के सूर्यों मे गृहारम्भ नेष्ट है ॥ इन मासों मे गृहा
रम्भ करना ॥ अथ गृहारंभ के नक्षत्र लिखते हैं ॥
उत्तरा तीनों रोहिणी मृगशिर रेवती चित्रा अनु
राधा पुनर्वसु अभिजित स्वाति धनिष्ठा हस्त पुष्य इन मे नक्षत्रों
मे गृहारम्भ करना ॥ अथ तिथयः ॥ द्वितीया पञ्च
मी पूर्णमासी ती ॥ द्वितीया पञ्चमी दशमी तीजा व
श्री सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी पञ्चमी द

२२ हाई भवी दवा में श्रुति ॥ और २२ ... में वेदा में चतुर्थ
शुद्धि देखना ॥

शौच कर्म भाद्र तिथियों में और शुक्ल पक्ष में
और स्थिर लग्न में और नंद गुरु बुध
शुक्र इन वारों में गृह आरम्भ करना और दे
खि स्वभाव लग्न में विरुद्ध आरम्भ करना
और लग्न में शुभ ग्रह केंद्र त्रिकोण में हो
तब शुभ मुहूर्त में खोदने का देख
ना अधोमुख नक्षत्रों में खनन करना
खोदना अधोमुख नक्षत्र हैं मूल अश्ले
षा कृत्तिका विशाखा पूर्वा तीनों मघा भर
णी यह नव नक्षत्र अधोमुख हैं इन में
खनन करना कूप का खोदना तलाव का
खोदना भूमि का खोदना शुभ है और
शुभ तिथि में शुभ वार में स्थिर लग्न में
इन्हें का खोदना करना और सर्प कि
पीठ पर हाथ लगा के खनन करना
जिस खंड में जिस दिशा में सर्प की पी
ठ हो उस में खनन करना मुख पर न
हिं करना अब सर्प के मुख पृष्ठ का च
क्र लिखते हैं

~~[illegible]~~
~~इसि [illegible] विकहते हैं~~

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
देवाः [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण अमावस्या तक चाँ-
द्रमास होता है ॥ संक्रांति से संक्रांति तक सौरमा-
स होता है ॥ कृष्णप्रतिपदा से शुक्ल पूर्णिमा त-
क सावनमास होता है ॥ और नक्षत्र से न-
क्षत्र तक चंद्रमा का नक्षत्र से एक मास हो-
ता है ॥ अर्थात् चित्रा से स्वाति पर्य्यंत चैत्र जानि-
ये इसी तरह अगाड़ी भी जाण लेना ॥ कार्यभेद
न मास ज्ञानम् ॥ विवाहे सस्यतः सौरो यज्ञादौ
सावनो मतः ॥ पितृकार्य्येषु चांद्रं च ऋक्ष दा-
दानव्रतेष्वपि ॥ यह वाक्य बृ॰ ज्योतिस्सार
ग्रंथ में लिखा है ॥ अथ कर्माधार में मुहूर्त-
चक्रम् ॥ बृ॰ ज्यो॰ सारे ॥ वेदाब्धि वेद श्रुति वेद
वेदफलम् ॥ जरा भाद्र गणमेव गारापं अर्थ-
व लाभं च तथा च सिद्धि लोमो मति एज मपं च माह
कार्यारंभं प्रकुर्वीत प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ अर्थ॰ भा॰ का॰

॥ अथ सर्वेसुख पूर्वकेंद्रम ॥ राहुभावेवा

	ऐशान्याम्	वायव्याम्	नैरृत्याम्	आग्नेय्याम्
देवालयारंभः	मीनमेषवृषमिथुते सर्वे राहुमुखम्	मिथुनकर्कसिंहस्थे सर्वे राहुमुखम्	कन्यातुलावृश्चिकस्थे सर्वे राहुमुखम्	धनुर्मकरकुंभस्थिते सर्वे राहुमुखम्
गृहारंभः	सिंहकंन्यातुलास्थिते सर्वे राहुमुखम्	वृश्चिकधनुमकरस्थे सर्वे राहुमुखम्	कुंभमीनमेषस्थिते सर्वे राहुमुखम्	वृषमिथुनकर्कस्थे सर्वे राहुमुखम्
जलाशयारंभः	मकरकुंभमीनस्थिते सर्वे राहुमुखम्	मेषवृषमिथुनस्थे सर्वे राहुमुखम्	कर्कसिंहकन्यास्थिते सर्वे राहुमुखम्	तुलावृश्चिकधनस्थे सर्वे राहुमुखम्

भाषाटीका ॥ अथ भूशोधक: ॥ देवालये गेहविधौ च
लोपूर्णे राहोर्मुखं वाभुदिशो विलोमतः। मी
नार्क सिंहार्क मृगार्कतस्त्रिभे खाते मुखात
पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥ भाषाटीका ॥ दे
वता के मंदिर और अन्य स्थान के खनन
न करना हो तो मेष वृष मीन इन के सूर्य
में सर्प का मुख ऐशान्य कोण में होता है ति
स मुख को छोड़ कर सर्प कि पृष्ठ आग्नेय कोण में
जानना तिस आग्नेय कोण में खनन करना थाप
लगाना शुभ है ॥ और मिथुन कर्क सिंह इन के सूर्य
में सर्प का मुख वायव्य कोण में होता है तिस को छोड़
कर ऐशान्य कोण में खनन करना शुभ है कंन्या तुला
वृश्चिक इन के सूर्य में सर्प का मुख नैऋत्य कोण में
होता है तिस को छोड़ कर वायव्य कोण में खनन कर
ना ॥ और धन मकर कुंभ इन के सूर्य में सर्प का मु
ख आग्नेय कोण में होता है तिस को छोड़ कर ऐशान्य
कोण नैऋत्य कोण में खनन करना शुभ है ॥ अथ
देवालयखननम् ॥ अथ गृहारंभ खनन मुहूर्त: ॥
सिंह कंन्या तुला इन के सूर्य में सर्प का मुख ऐशान्य
कोण में होता है तिस को छोड़ कर आग्नेय कोण में
खनन करना शुभ है और वृश्चिक धन मकर इन के
सूर्य में सर्प का मुख वायव्य कोण में है तिस को छो

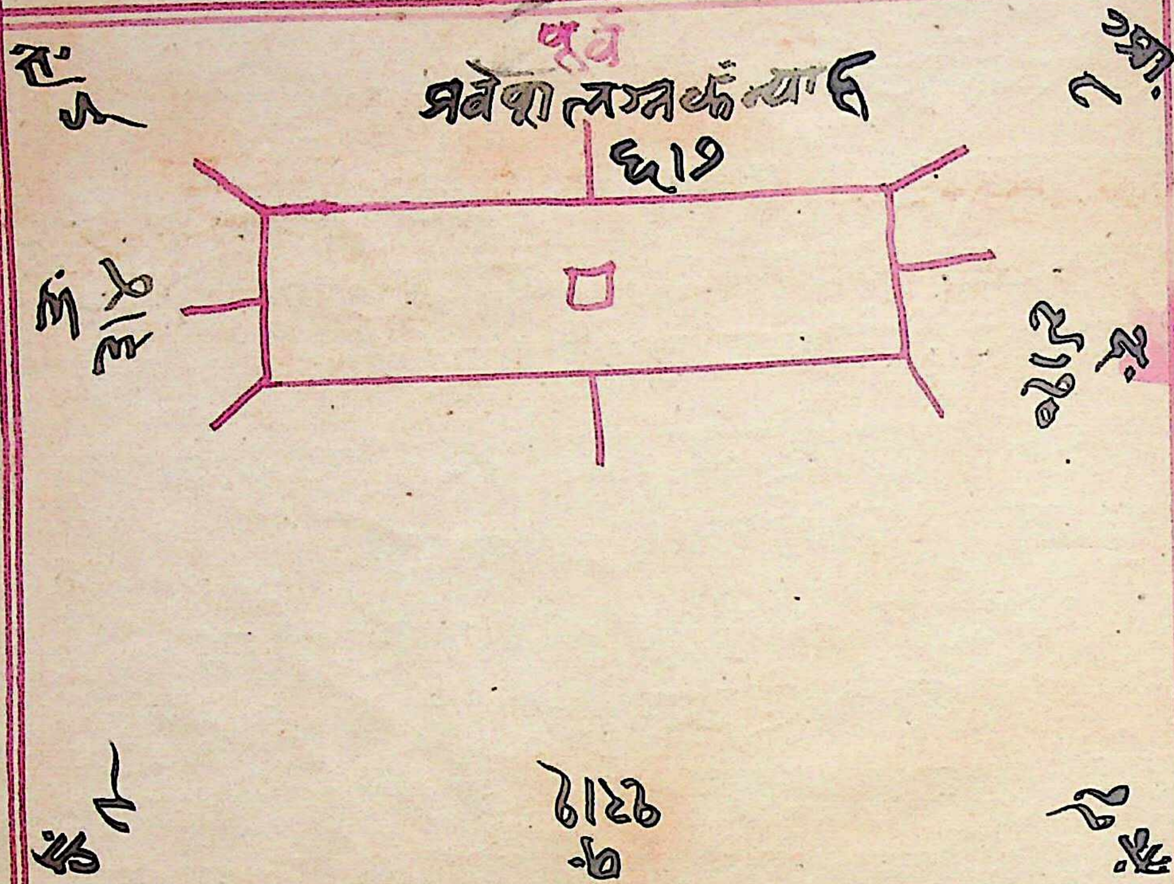
इकर ऐशान्य कोण में खनन करना शुभ है कुंभ मी
न मेष इन के सूर्य में सर्प का मुख नैऋत्य कोण में हो
ता है तिस को छोड़ कर वायव्य कोण में खनन क
रना शुभ है ॥ और वृषभ मिथुन कर्क इन के सूर्य में
सर्प का मुख आग्नेय कोण में होता है तिस को छोड़
कर नैऋत्य कोण में खनन करना शुभ है ॥ इति गृहा
रंभ खननम् ॥ अथ जलाशयारंभ खननम् ॥
जलाशय नाम कूप तालाव इन के खोदने में
में सर्प का मुख देख कर खनने का विचार लि
खते हैं ॥ मकर कुंभ मीन इन के सूर्य में सर्प का
मुख ऐशान्य कोण में होता है तिस को छोड़ क
र आग्नेय कोण में खनन करना शुभ है ॥ औ
र मेष वृषभ मिथुन इन के सूर्य में सर्प का मुख वा
यव्य कोण में होता है तिस को छोड़ कर ऐशान्य
कोण में खनन करना शुभ है ॥ कर्क सिंह कन्या
इन के सूर्य में सर्प का मुख नैऋत्य कोण में होता
है तिस को छोड़ कर वायव्य में खनन करना ॥ और
तुला वृश्चिक धन इन के सूर्य में सर्प का मु
ख आग्नेय में होता है तिस को छोड़ कर नैऋत्य
में खनन करना शुभ है ॥ इति जलाशया ख
ननम् ॥ अथ शुभ नदी नालों में खनन करना

अधोमुखनक्षत्र यह हैं मूल अश्लेषा कृतिका विशा
खा पूर्वा तीनों मघा भरणी यह नवनक्षत्र हैं॥
और ऊर्ध्वमुख नक्षत्रों में शिलास्थापन करनो
ऊर्ध्वमुख यह हैं। आर्द्रा पुष्य श्रवण धनिष्ठा
शततारा रोहिणी तीनो उत्तरा यह नवनक्षत्र
हैं। और तिर्यङ्मुख नक्षत्र यह हैं मृगशिर रे
वती चित्रा। अनुराधा हस्त स्वाति पुनर्वसु ज्ये
ष्ठा। अश्विनी यह नवनक्षत्र तिर्यङ्मुख हैं
इन में हार वा कांठ धरणी देहली धरणी
करना उत्तम मे शुभ हैं। उक्तं च मुहूर्त चिन्ता
मणौ शिवम्रधारा वा मे नासु चक्र णीं॥ अधो
मुखैर्भैर्विदधीत खातं शिलास्तथा चोर्ध्वमु
खेश्च पट्टम्। तिर्यङ्मुखैर्द्वारकपाटयानं ग
हप्रवेशो मृदुभिर्ध्रुवर्क्षैः॥१॥ गृहप्रवेश प्राती
नोऽर्कवारे हिणी इन ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में क
रना बहुत ही शुभ लिखा है इस पूर्वोक्त वाक्य
से॥ इति गृहारंभ मुहूर्त समाप्तम्॥ अथ गृ
हप्रवेश मुहूर्तः॥ सौम्यायने ज्येष्ठ तपोऽन्त्यमा
धवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे स्याद्द्वाप्रवे
शस्य मृदु ध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयो
दयेस्थिरे॥१॥ [illegible] सौ [illegible] नना[illegible]

उत्रायणका है उत्तम गृह प्रवेश क
रना और गुरु शुक्रका उदय होना अस्त ना
हो और माघ फाल्गुण वैशाख जेष्ठ इन म
हीनों के बिषे गृह प्रवेश करना शुभ है ॥ का
र्तिक मार्गशीर्ष इन में गृह प्रवेश करना मध्य
म है ॥ माघस्य लाभः प्रथम प्रवेशे ज्येष्ठे लाभः ॥
खलु फाल्गुने च वैशाखे धनधान्य लाभ
भोगे श्रावण मासि पशु पुत्र लाभः ज्येष्ठे पुत्र च
मास पुत्र पशु हानि प्रदः श्रावणं भय प्रद
[illegible]
च पाव दूषाभि ... ॥१॥ और पुष्य
पदमे गृह प्रवेश करना शुभ है और कर्क सिं
ह कन्या तुला कुंभ इन राशिओंका सूर्य होतो
नवे घर मे प्रवेश नहिं होना और सामान्य
शनेश्वर मे पाकशाला दिक के घरमे
वास करे तो प्रवेश हो जाना शु
भ है और ध्रुव संज्ञक मैत्र संज्ञक नक्षत्रों
मे प्रवेश होना शुभ है जिस दिशा को दरवाजा
है उस दिशा के नक्षत्रों करके प्रवेश करना
शुभ है जिस दिशा का गृह प्रवेश हो दरवाजे

का मुख तिस दिशा के मंदिर में प्रवेश करना
जो पूर्वाभिमुख द्वार हो तो रोहिणी मृगशिर इन
नक्षत्र में प्रवेश करना शुभ है जो दक्षिणाभिमुख
द्वार हो तो उत्तराफाल्गुनी चित्रा इन नक्षत्रों में प्र
वेश करना शुभ है जो पश्चिमाभिमुख द्वार हो तो अनुरा
धा उत्तराषाढ़ा इन नक्षत्रों में प्रवेश करना शुभ है जो उत्तराभि
मुख द्वार हो तो उत्तराभाद्रपद रेवती इन नक्षत्रों में प्र
वेश करना शुभ है यह मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधारा
में मुख्य वाक्य लिखा है और गृहप्रवेश में अग्नि
बाण भी देखना स्थिर लग्न भी देखना और जो
लग्न प्रवेश का है उससे चतुर्थ भाव कि शुद्धि दे
खनि और कुंभचक्र और वामसूर्य देखना और
शुभ वार हो शुभ तिथि हो इन में गृहप्रवेश करना /
द्विस्वभाव लग्न में भी करलेना और गृहप्रवेश में द
ग्धा तिथि वर्जदेनि और चांद्रमास शुक्लपक्ष कि प्रति
पदा से कृष्णपक्ष कि अमावस्या तक कहते हैं
तिस चांद्रमास में गृहप्रवेश करना अब गृहप्रवे
श में वाम रवि चक्र लिखते हैं गृहप्रवेश लग्न से जो
अष्टम स्थान राशि है तिससे पांचवें स्थान में जो सूर्य
हो तो वाम रवि जानना अथ वाम रवि चक्र लि
खते हैं जिस लग्न में गृहप्रवेश हो उस लग्न से पू
र्वके दिशाओं में दो दो राशि स्थापन क
रनी और एक एक राशि कोणों में स्थापन करनि

...वंत सुख... भता के पन्चमै मा...नोदसंदेर ॥
॥ ति...प्रवेश नेष्टहे ॥ आनन्दा... जाने...
...ननेषा

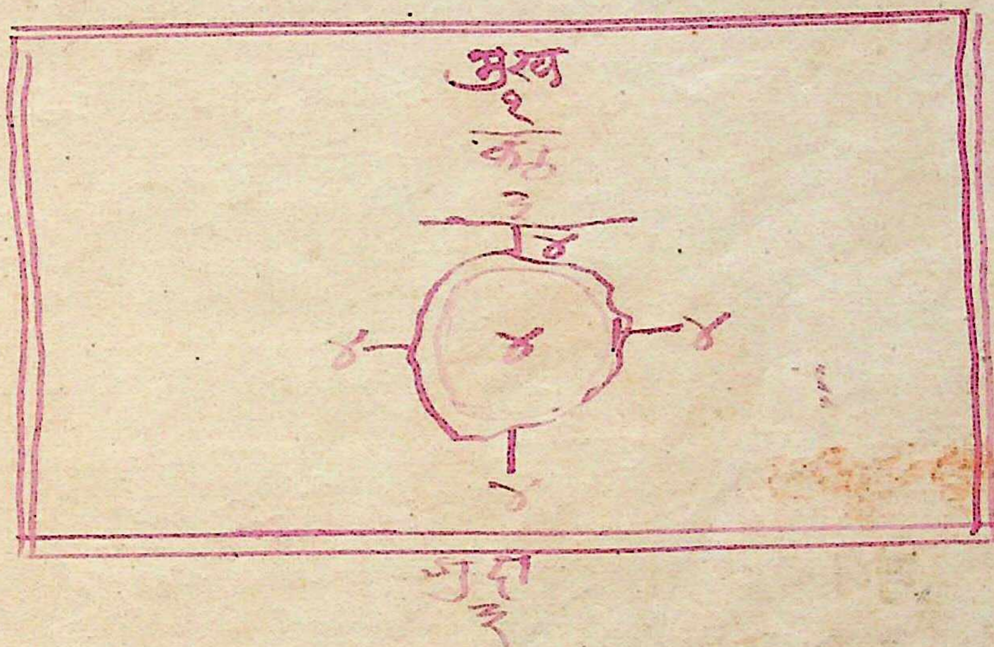


उदाहरण यह है ॥ जब कंन्या लग्न महं प्रवेश लग्न है तिस
ते ॥ प्रथम मेष लग्न हुवा तिस मेष लग्न से पांचवीं राशि
मे वामरवि स्पष्ट होता है जब मिथुन कर्क सिंह इन रा
शि मे स्थित सूर्य वाम स्पष्ट दिखता है यह वामरवि ल
क्षण मे का उदाहरण है यह गृह प्रवेश मुहूर्त मे वा
मरवि चक्र देखना लिखा है ॥ और कुंभ चक्र गृह
प्रवेश मे देखना लिखा है ॥ अब कुंभ चक्र को लिखते
है ॥ तथा च श्लोकः ॥ वक्त्रे भू रविभात् प्रवेश सम
ये कुंभेऽग्निदाहः कृताः प्राच्यां उद्वसनं कृता यम
गतालाभः कृता पश्चिमे श्रीर्वेदाः कलिस्तर

पुत्रमिता गर्भे विनाशो गुह्यदे समाः स्यौ ?र्ये मतः
स्थिरत्वमनलाः कंठे भवेत् सर्वदा ॥२॥

॥ अथ कुंभचक्रम् ॥

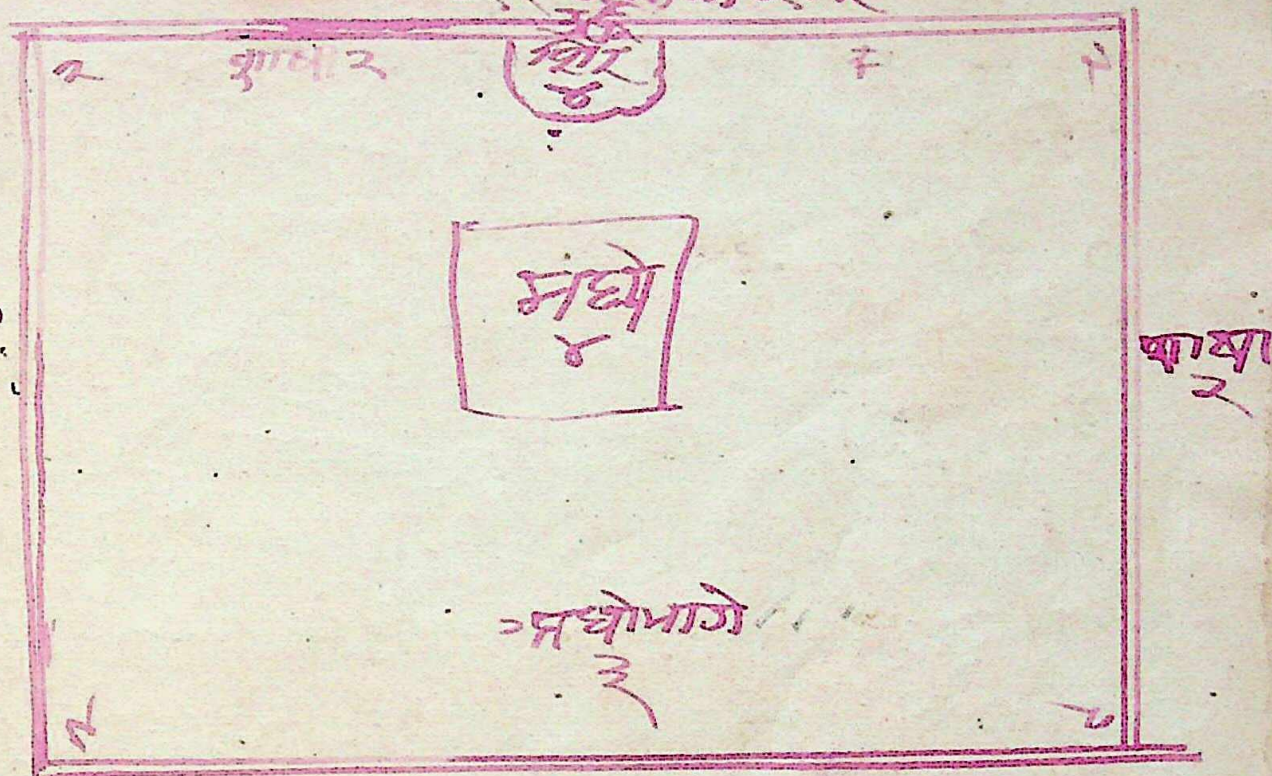
घटाकारं लिखेच्चक्रं रविधिष्ण्यात्क्रमेण च मुखे
कंदिक्षु चत्वारि त्रिस्त्रीणि गुदकंठयोः एवं चक्रं
समालेख्यं भवेत्प्रार्थं सद्बुधैः ॥१॥



अग्निनाशो मुखे प्रोक्तः उद्वासः पूर्वतो भवेत्
दक्षिणे चार्थलाभः पश्चिमे श्री प्रदो भवेत्
उत्तरे कलहश्चैव गर्भे गर्भ विनाशनम्
स्थिरता च गुदे कंठे कलशस्य प्रकीर्तिता ॥४॥
अर्थ ॥ जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र
को प्रथम कलश के मुख मे देना फेर चार नक्ष
त्र पूर्व मे लिखने चार दक्षिण मे ४ पश्चिम मे

चार उत्तरा मे तीन कंठ मे ३ गुदा मे इस प्रका र
२१ नक्षत्र स्थापन करने तिन्ह का फल लिखते
हैं अब वे इस समय के बिच जो नक्षत्र हो जो वो नक्षत्र
जिस स्थान पर मिले ही सो में आ जावे तिस का
फल देखना जो शुभ फल हो तो गृह प्रवेश क
र लेना जो अशुभ है तो न प्रवेश नहि करना।
अब सूर्य का नक्षत्र जो कलश के मुख मे
है तिस का फल अग्निदाह करै सो अशुभ है
फेर चार नक्षत्र पूर्व के उजाड़ करै अशुभ
है [illegible] फेर चार दक्षिण के नक्षत्र दुःख प्रा
प्ति करै शुभ हैं फेर फेर चार पश्चिम के
लक्ष्मी प्राप्ति करैं शुभ हैं फेर चार नक्षत्र
उत्तर के कलह करै अशुभ हैं फेर चार न
क्षत्र कलश के मध्य के गर्भ के अशुभ है
नाश करने वाले संतान हानि करने वाले
हैं फेर तीन गल के शुभ हैं फेर तीन कंठ के शुभ
हैं। इति कलश चक्रम्।। इति गृह प्रवेश मुहू
र्तः समाप्तम्।। अब गृह के द्वार लगाने का नाम चक्र
ठ का लेना नाहे ली का धारण का मुहूर्त तत चक्र
लिखते हैं।। द्वार चक्र अब नामभिभाषितं चक्र
मेशास्य भा दु चतु [illegible] कं तु द्वार स्थाप
दि विन्यसेत।। इ हे [illegible] मदत व्य शाषा, मुगेह

ऋक्षम् अधश्चत्रीणि देयानि वेदं मध्ये प्रतिष्ठिता:
रुग्यं स्याद् दुःखं नक्षत्रे कोणेषु भ्रमणं भवेत्
शाखायां लभते लक्ष्मीं मधश्चैव भूतिं लभेत मध्य
मे पुत्र लभेत्सौख्यं चिंतनीयं समबुधैः ॥



सूर्यके नक्षत्रसे जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से
लेकर द्वार के शिर के ऊपर चार नक्षत्र स्थापन क
रने दो कोने नक्ष कोणों पर स्थापन करने दो दो नक्षत्र द्वा
र की शाखों पर स्थापन करने और चार नक्षत्र द्वा
र के मध्य में स्थापन करने और तीन नक्षत्र द्वार के
अधोभाग में स्थापन करें अब इन नक्षत्रों का
फल लिखते हैं जिस नक्षत्र में द्वार बनाया है तो

स्थापन करे जो वो हमनक्षत्र हार के शिर के उपर आन प
डे तो वो हार के चारन नक्षत्र राज्य के देने वाले हैं शुभ
हैं और कोणों के नक्षत्र अशुभ हैं इस में जो हार स्था
पन का नक्षत्र आन पडे तो अशुभ है और दूजा पौं
के नक्षत्र लक्ष्मी दायक हैं शुभ हैं और अधोभा
ग के तीन नक्षत्र मृत्यु दायक हैं अशुभ हैं और
हार के मध्य के चार नक्षत्र शुभ दायक हैं ॥
इति फलम् ॥ अब हार के चौकाठ के देहली स्था
पन करने के नक्षत्रों को लिखते हैं अश्विनी उ
त्तरा तीनों ॥ हस्त ॥ पुष्य ॥ श्रवण ॥ मृगशिरा ॥ रेव
ती ॥ स्वाति ॥ रोहिणी ॥ इन नक्षत्रों में चौकाठ दे
हली धरणी ॥ और पञ्चमी सप्तमी अष्टमी न
वोमी इन तिथियों में स्थापन करना देहली च
काठ ॥ उक्तं च पञ्चमी धनदा चैव मुनिनन्द व
सौ शुभम् प्रतिपत्सु न कर्तव्यम् कृते दुःख मवा
प्नुयात् द्वितीया कामद्रव्य हानि पशु ॥ पुत्र विना
शनम् तृतीया रोगदा ज्ञेया चतुर्थी भङ्ग का
रणी कुलक्षयं तथैव षष्ठी दशमी धननाशि
नी विरोधकृद्दश्या पूर्णे न स्यात् शुभ स्थापन तो
श्रम् ॥ १ ॥ इति तिथि फलम् ॥ और शुभ वार
मे देहली स्थापन करना. शिवरात्रि मे स्थापन न

२ 13

श्रीगणेश अथ गृहारंभे वृषवज्र देखणा ॥
वृषवज्र विचार कर के फेर गृहारं
भ करणा शुभ है ॥ प्रथम वृषवज्र ते लिख
ते है ॥ तथा च श्लोकः ॥ गेहारंभे र्कभाद्वत्स
शीर्षे रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे ॥ शून्यं वेदैः पृष्ठ
पादे स्थिरत्वं रामैः पृष्ठे श्री र्वेगैर्दक्षकुक्षौ ॥१॥
लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैः स्व्यं वाम
कुक्षौ मुखस्थैः रामैः पीडा संततं चार्कधिष्ण्या
द्वत्से मदुर्दिग्मिस तं त्य सत्सत ॥२॥ अर्थ गृहा
रंभ के विषे सूर्य के नक्षत्र से जिस नक्षत्र पर सूर्य है
तिसतें तीन नक्षत्र वृषभ के शिर के उपर स्थापन
करने जो गृहारंभ का नक्षत्र वृषभ के शिर के उप
र तीन नक्षत्रों में आन पडे तो दाह करे अशुभ
है और चार नक्षत्र वृषभ के अग्रपाद के हैं तिन
में आन पडे तो [redacted] शुभ है वहु है और
फेर चार नक्षत्र वृषभ के पृष्ठ पाद के हैं तिस का
फल स्थिरता करं शुभ है फेर तीन नक्षत्र वृष
कि पृष्ठ के है सो लक्ष्मी दायक है फेर चार न
क्षत्र वृषभ कि दक्षिण कुक्षि के है सो लाभ दायक
है फेर चार नक्षत्र वृषभ कि वाम कुक्षि के हैं सो द
रिद्र के करने वाले हैं फेर तीन नक्षत्र वृषभ के
मुख के हैं सो पीडा के देने वाले हैं फेर ती न

नक्षत्रचक्रकी पृष्ठ के है सो मे पृष्ठ है अश्लम

अथ खरचक्रं गर्भमस्त्र्वेभात

उक्तं च ज्योतिःप्रकाशे॥ गर्दभे भास्करभे च
त्रिभं भानेकादपृष्ठमात्त्वकुक्षौ चाय
त्रिभं त्रिभं पंभिति मुखे पुच्छ वास्तु त्रि॥२॥
सूर्यके नक्षत्रसे सात नक्षत्र नेष्ट है एकादश
नक्षत्र शुभ है कोदश नक्षत्र अशुभ है इति
खरचक्रं वास्तुचक्रं समाप्तम्॥

अथ कूपारंभमुहूर्तः॥ तत्रादौ प्रथमं कूप
खननमुहूर्तं लिख्यते॥ माकुवन्तिमं टुक
अस्मिन्निति कूपः॥ कूपाहिं दुधस्य कूप
म नभा वा अथौ प्रख नक्षत्रों मे कूप का ख
नन करना॥ अथ धाप्रवैषे विदधीत खाद्यं
इति वचनात्॥ अथ कूप किसी राशिका नि-ला
रुति खवतै चरके नक्षत्र मे कूपका लगना

वहुत होमे छह है ते ईशान्य कोणमे श्रेष्ठ है पूर्व दि
शामे श्रेष्ठ है आग्नेयमे सन्तान हानिकारक
है दक्षिण कोण मे स्त्री नाशकारक है नैऋ
त्य कोणमे बहुत ही श्रेष्ठ है वायव्यकोणमे
शत्रुसेपीडा उत्तर मे सुख के देनेवाला होता है ॥ उक्तं च ग्र
न्थान्तरे ॥ ऐशान्ये पूर्व जल निश्च स्त्रीनाशो निधनं भवेत
संपच्च ऊर्मं शोषं पुष्टि आगादितः क्रमात ॥१॥
ज्योतिसार ग्रंथमे लिखा है कूपमे जलदेखनेका चक्र
सो लिखते है ॥

२
पूर्व
कूप में जल नहीं निकलेगा ॥

१
रो. म. आद्रा. कूपमें श्री
जल निकले ओर
॥ स्वादु जल होगा ॥

॥अथ भूमिसुप्तविचार लिख्यते॥ मघोत्तराम्त्ये वनमां
स्वेनमें [illegible] द्दु पं ड्रिं शुभमता निशा शिव ५।७।९।१२।१९
२८। मही अस्वप्नान्तं देवभून्नं तडागकूपादि गर्त
न कुर्यात् ॥१॥ यह मांवा मुहूर्तचिंतामणिः का है अर्थ
जिस नक्षत्रपर सूर्य हो तिस नक्षत्रसे जो [illegible]
अंक ५।७।९।१२।१९।२६ इनमें हों
तो उस दिन भूमि सोती है तिस भूमिके सोनेमें
मेज हलकि न्यू खोदनी नहीं चाहिये और सूत
डाग कूपका खननकरना भी नहिं चाहिये
और भठिभी नहिं खोदनी चाहिये और तडाग
का खननमें और इहकी न्यूं खोदनेमें यह
भूमिसुप्तविचार देखना और मीन कर्क म
कर इन लग्नोंमें कूपखननकरे तो बहुत ही
जल निकलेगा ॥ वृष कुंभ मेष आ जल
वृश्चिक तुला में बहुत ही स्वल्प जल और
मेष मिथुन सिंह कन्या धन इन लग्नोंमें
जल निष्फल नहिं निकलेगा ॥ और भ
भति भि मच्छ्रम आर में अभच दुमा हो ४
८।१२ नाहं यह मुहूर्त जनगसा हे द
न लिखे हैं [illegible]

[illegible]

॥ इतिकूपखननमुहूर्तः ॥ अथ कूपारंभमुहूर्तः ॥ अब कूपारंभ वा नेमींव चवकधरणेका मुहूर्त लिखते हैं उक्तं च ॥ हस्तः पुष्यो वासवं वारुणा च मैत्रं [illegible] पित्र्यं रोहिणी चैव गोत्तराणि प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारंभे श्रेष्ठमाहुर्मुनींद्राः ॥१॥ अर्थ ॥ हस्त ॥ पुष्य ॥ धनिष्ठा ॥ पूर्वाभाद्रपद ॥ अनुराधा ॥ मघा ॥ तीनो उत्तरा ॥ रोहिणी इन नक्षत्रों में कूपारंभ करना नीव चवकधरना शुभ है और स्थिरलग्नो मे और शुभ तिथि मे शुभ वारों मे शुभ चंद्रमा मे ४।८।१२ ना हो और रभ कुनांत नहे श्रेष्ठ मुहूर्त मे कूपारंभ करना ॥ इति कूपारंभमुहूर्तः ॥ शुभमस्तु ॥ कूपखनने लग्नविचारः उक्तं च पीयूषधारायाम् ॥ च रूपेणाप्युक्तम् ॥ जरो होवालेरनगते [illegible] कर्मेगते विधो आप्य मे गलकार्याणामारंभः सिद्धिदः स्मृतः ॥१॥ मासे पू कर्म वर्जित है पहवद् ज्यो॰ सार मे वाक्य ति खाहे ॥ पा

प्रवेश नमू

[redacted]

अथ चंद्रवासस्थानम् ॥ तिथिं चतुर्गुणी कृत्वा एकेन च समान्वितं अष्टभिश्चैव हरेद्भागं शेषं चंद्रनिवेशयेत ॥१॥ एकेन वसते स्वर्गे द्वि केवा [illegible] तालभे व चे तृतीये वसते मृत्युः सर्वकर्मणि धारयेत ॥२॥ पाता ल स्य चंद्र चंद्र वा कर्मणि वर्जयेत ह्

[illegible] सिर [illegible]

कृषी वाणिज्य डागकूप कर्मणि ॥३॥ भावार्थ को वर्तमा
नतिथि को पंचगुणा कर उसमे १ जोड देना फेर तीन
का भाग देना शेष को फल जो लिये एक बचे तो
स्वर्ग मे शुभ है और २ शेष बचे तो पाताल मे
शुभ है और तीन शेष बचे तो मृत्युलोक मे वास
शुभ है ॥ पाताले वसते भद्रे पंच कर्मणि शुभ
र्वयेत् वापीकूप जले नासि [illegible] नासि मही
तले वा आ को कुधालो नासि पठ तो मासि [illegible]
र [illegible] मृ ॥४॥ अथ भद्रा विचार लिख्यते ॥ [illegible] मह
तीर्थि तामृ गो विघु [illegible] ॥ [illegible] ले पूर्वार्द्धे
मृता पद्दे प्रथम्या पूर्णिमायां च पूर्वार्द्धे भद्रा
नतिएकादश्यां चतुर्थ्यां उत्तरार्द्धे भद्रा भवति
॥ अथ कृष्ण पक्षे तृतीयायां दशम्यां च
उत्तरार्द्धे भद्रा स्यात् ॥ सप्तम्यां चतुर्दश्यां
[illegible]
पूर्वार्द्धे भद्रा स्यात् ॥ पंचाशत् [illegible] : पंचम
प्रहरे आदिम घटिकाः पंच भद्रा मुख म
एवं प्रथम्याः द्वितीय प्रहरे एकादश्याः स
प्तम प्रहरे पौर्णमास्याः षष्ठे प्रहरे तृती
यायाः अष्टम प्रहरे सप्तम्याः तृतीय प्रहरे
चतुर्द[illegible]श्याः प्रथम प्रहरे भद्रा
खमित्युच्यते: तद्वर्जयेत् भद्रा मुखं [illegible]
स तु पुच्छ भद्रा मित्युच्यते: पंचाशत् [illegible]
[illegible] भद्रा [illegible] प्रशस्त घटिका [illegible]

[illegible]

पुच्छं एवं जन्म प्रथमांश प्रथम ग्रहस्य जन 16
न्म घटीत्रयं पुच्छं एकादश्याः सप्तम ग्रह
स्य जन्म घटीत्रयं पुच्छं पूर्णिमा पादः
तृतीय ग्रहस्य जन्म घटीत्रयं पु
च्छं तृतीया पादः सप्तम ग्रहस्य जन
न्म घटी त्रयं पुच्छं ॥ सप्तम्याः द्वि
तीय ग्रहस्य जन्म घटीत्रयं पुच्छं
दशम्याः एवं नवम ग्रहस्य जन्म
घटी त्रयं पुच्छं वद दश्याः चतुर्थ ग्र
हस्य जन्म घटीत्रयं पुच्छं इत्य
पुच्छ की घटिती जहाँ तहाँ तक सौ जुम होती है
र्थः ॥ नवम द्वादश तेत्यमिधीयते
तस्याः पुच्छ कथनात् पश्चात् त्वसि
द्धिर्द दृश्यते देवताव कर्णं पशु
मवितुमर्हति ॥ समाप्त ॥ दैत्ये दे
ज पराजिते भूसद्रुस्य ज्वालामा
लाकुल नेत्रा लोकित दासिता देव
मनुसंज्ञा प्रथम पुच्छादि मनुष्य
ना सती दैत्या नूज घातं ॥ वदु दै
श्री दतिकामदैत्यमेदैः समस्तमरे प्रति

न कुर्वीत कृत्ते वि[illegible] कुणो और मृत्ता चौक

वित श्री गः कुधा दृष्ट गान्धर्वं कार्ये किल नि
जेता खर मुखी स्यां गृलिनी जनित्र्यातु विष्टि
सत्त्वभुजा मृगेन्द्र ज त्व क्षा दामोदर शि प्रेत गा
ईत्यब्दै घ्री भदितैः सुरै स्र कर गणमाने
त्रिषु का सदा ॥१॥ अथ भद्रापरिहार माह ॥
रात्रिभद्रा यदा ऽ ह्नि स्यात् दिवा भद्रा यदा नि
शि न तत्र भद्रा दोषः स्यात् सा भद्रा भद्रद
यिनी ॥१॥ शीघ्रबोधे पि० ॥ दिवा भद्रा पद
रात्रौ रात्रि भद्रा यदा दिने तदा विष्टि कृतो दो
षो न भवेत्सर्वसौख्यदा ॥२॥ टीका ॥ जो कृष्ण प
क्ष मे ७।१४ और शुक्ल पक्ष मे ८।१५ इन
तिथियो मे भद्रा पूर्व दल मे पूर्वोक्त जाय
द्रा होती है सो वोह भद्रा दिन संसवा है
उसको दिवा भद्रा कहते है ॥ जो वोह दिवा भ
द्रा रात्रि मे हो जावे ॥ और शुक्ल पक्ष मे ४।११
और कृष्ण पक्ष मे ३।१० को भद्रा पर दल मे
होती है परार्द्ध जो उसको कहते है वोह रा
त्रि संज्ञक है उसको रात्रि भद्रा कहते है
जो वोह रात्रि भद्रा दिन मे हो जावे तो भद्रा
का दोष न हो होता है ॥ वोह भद्रा सब की दा
है ॥ अब और परिहार कहते है ॥ प्र॰ चिं॰
मणौ ॥ कुंभ कर्क द्वये मर्त्ये स्वर्गे ऽ ब्जे ऽ गा
ऽ स्तिजे स्त्री धनुर्जूके नक्रे ऽधो भद्रा

[illegible] ॥

तत्रैव तत्फलम्॥ टीका॥ अज्वे चन्द्रमसि कुंभ 17
मीनस्थे॥ कर्क वृषे कर्के सिंह राशिस्थिते स
ति भद्रा मर्त्ये मनुष्य लोके तिष्ठति॥ भाषा॥
कुम्भ मीन राशि मे और कर्क सिंह राशि मे
जो चन्द्रमा स्थित होतो भद्रा मनुष्य लोक मे
वास करती है॥ सो वो हम भद्रा सर्व कार्य के ना
श करणे वाली है॥ और मेष वृष मिथु
न वृश्चिक इन राशियो मे जो चन्द्रमा
स्थित हो तो भद्रा स्वर्ग लोक मे वास कर
ती है॥ सो वो हम भद्रा शुभ कार्य के करणे
वाली है॥ और कन्या धन तुला मकर
इन राशियो मे जो चन्द्रमा स्थित हो तो भ
द्रा पाताल लोक मे वास करती है॥
सो वो हम भद्रा धनागम के करणे वाली है
॥ यहि आशय को लेकर के आचार्य बोधीमें
लिखा है॥ स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धन
नागमं मृत्यु लोके यदा भद्रा सर्वकार्य वि
नाशिनी॥ अब और भी परिहार लिखते है॥
पीयूषधारायाम्॥ विष्टि रजार व चैव
व्यतिपात श्च वैधृतिः प्रत्यरि जन्म नक्ष
त्रं ~~प्रत्यरि जन्म नक्षत्र~~ मध्यात्परतः
शुभम्॥ ३॥ यहम भद्रा विचार मु. चिन्तामणि के बाबे
रोति ४३

॥ अथ चक्रम्॥
कृष्णपक्षकी १।१४ को पराई भद्रा॥ कृष्णपक्षकी ७।१४ को पू. भ.
कृष्णपक्षकी ३।१० को पराई भद्रा॥ उत्तराई भद्रा
शुक्लपक्षकी ४।११ को पराई भद्रा

॥ पूर्वार्द्ध ते
शुक्लपक्षकी ८।१५ को पूर्वार्द्ध भद्रा॥

धर्मसिंधुग्रन्थे द्वितीयपरिच्छेदे प० ६१
भद्रा मुखपुच्छलादृणाम् ॥ पूर्णिमायां
भद्रायास्तृतीयपादान्ते घटीत्रयं पुच्छम्
॥ चतुर्थपादाद्य घटिपंचकं मुखम्
॥ तथा च मध्यममानेन षष्टी घटीमित
याम् पूर्णिमायाम् पूर्णिमाप्रवृत्तस्य तेर
सार्द्धे कोनविंशति घटिकोत्तरम्
घटीत्रयं पुच्छम् ॥ सार्द्धद्वाविंशति
घटीकोत्तरं घटीपंचकं मुखम् तिथेः
चतुःषष्टी घटीमितत्वे पूर्णिमायाः
एकविंशति घटीकोत्तरं पुच्छ
म् चतुर्विंशति घटीकोत्तरं मुखम्
॥ एवं तिथ्य ये मानानारेण ज्ञेयम् ॥
प्रपति पि प्रत्नस्मार भद्रापाः दिग् निवासः ॥ भद्रा कौए
सी दिशामे वास करती है ॥ यह वाक्य ८ होडा चक्रमे
वो लिखा है ॥ प्राच्यां भद्रा चतुर्दश्या माग्नेय्याम् ष्टमीति
थौ सप्तम्यां दक्षिणस्यां वै नैरृत्यां पौर्णिमा तिथौ ॥ प
श्चिमायां चतुर्थ्यां च वायव्यां दशमी तिथौ एकादश्यामु
त्तरस्यां ऐशान्यां गिरिजा तिथौ ॥ भद्रा मुखे च यो याति
क्रोश मेकं न तु नो तरमुपुनेरागमनं नास्ति नद्यामृह सा
गराद्यथा ॥ १ ॥ इति भद्रा विचारः समाप्तः ॥ श्री

लग्न १

अथ लग्नघटीपलमानम् ॥ मेषादि लग्न कितने घटीपल का है यह विचार लिखते हैं ॥ व. हेडाचक्र से ॥ भीना औ साध्र्धत्रि स्नाः स्यु घटयः पा छेन पञ्चक भ वबकु भौ तथा ज्ञेयो का देनं घट पशलिच ॥ १ ॥

अथ लग्नघटीपल-चक्रम्

रा.	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिं.	कन्या	तु.	वृश्चि.	धन
घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५
प.	३०	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५

मेषादि लग्न प्रतिदिवस घटने का वे क्रान्ति है उदाहरण ॥ मेष लग्न पल १। विपल ७ प्रति दिवस घटता है इसी प्रकार सब घटता है

मकर	कुम्भ	मीन
५	४	३
४५	४५	३०

व०	क०	कन्या लग्न	धन	कुम्भ लग्न
५८	११	प. १०	प. ११	प. ८
वि०	वि०	वि. ३६	वि. १२	वि. ५४
२४	१२	तुला लग्न	मकर	मीन लग्न
मि०	लि	प. १०	प. १०	प. ७
प. १०	प.	वि. ३६	वि. २०	वि. ५६ नियत
वि०	११ वि.	वृश्चिक		
२०	२	प. ११ वि. २		[illegible] ॥

अथ ग्रहाणां भुक्त संख्या ॥ व. हेडा चक्रे ॥ स
प्तविंशति भ: स्यादेकविंशा बुध संख्या
त्रिपञ्चं भृगुजस्य मासमेकं तु भास्कर: ॥१॥
त्रयस्त्रिंशदर्क मासांश्च त्रिंशन्मासान्वा नैश्च
र: राहुश्च केतु सार्धवर्षं ग्रह संख्या निग
द्यते ॥२॥

चं.	बु.	मं.	सू.	गुरु	श०	रा०	के.	पहर	पर	
२॥ दिन रहै	२१ दिन	४५ दिन	१ मास	१३ मास	२॥ वर्ष रहै	१८ मास	१८ मास	सवा एक राशि	[illegible]	[illegible]

चंद्रमा सवा २ दिन एक राशि पर रहता है

सूर्य एक राशि पर एक मास रहता है एक नक्षत्र के चार चरणों को सूर्य १५ दिन में भोगता है॥
(सूर्य ४ दिन १ चरण को भोगता है॥)
मंगल ४५ दिन एक राशि पर रहता है २० दिन एक नक्षत्र पर रहता है ४० दिन दो नक्षत्र पर रहता है एक चरण को ५ दिन में भोगता है ॥ २१ दिन बुध एक राशि पर रहता है ११ दिन में एक नक्षत्र को भोगता है ३ दिन में एक चरण को भोगता है ॥१३

मास गुरु एक राशि पर रहता है ६
मास मे एक नक्षत्र पर रहता है और २
१॥ मास एक चरण को भोगता है॥
२७ दिन शुक्र एक राशि पर रहता है
९ दिन एक नक्षत्र को भोगता है ३ दिन
एक चरण ~~नक्षत्र~~ को भोगता है ॥२॥ वर्षप
र्यन्त एक राशि पर रहता है १ वर्ष मे
एक नक्षत्र को भोगता है ३ मास एक
चरण को भोगता है ॥१८ मास राहु
केतु एक राशि पर रहता है ८ मा
स मे एक नक्षत्र को भोगते है २ मा
स एक चरण को भोगते हैं॥ मंगल बु

~~[illegible]~~ और प्रकार से ग्र
ध्यान रखने से स्पष्ट का चरण भोग न दे भोग
राशि भोगते रहते है ॥

अथ सूर्यादी चरण नक्षत्र राशि भोग लिख्यते ॥

सूर्य का चरण भोग	नक्षत्र भोग	राशि भोग सूर्य का ॥	सूर्यादि ग्रह ॥
[illegible]	[illegible]	[illegible]	इसप्रकार सूर्य भोगता है ॥
चरण भोग दिन ३ घ० २०	नक्षत्र भोग दिन १३ घ० १०	राशि भोग मास एक राशि पर रहता है सूर्य ॥	
सूर्य एक चरण को भोगता है	एक नक्षत्र को भोगता है सूर्य		
चंद्रमा १५ घड़ी एक चरण	चंद्रमा १ दिन एक नक्षत्र पर रहता है	चंद्रमा दिन २ घड़ी १५ एक राशि पर रहता है ॥	चंद्रमा
मंगल ५ दिन एक चरण को भो	मंगल २० दिन एक नक्षत्र भोगे	मंगल ४५ दिन एक राशि को भोगे	मंगल०
बुध २ दिन २० घड़ी एक चरण को भोगता है	बुध ८ दिन २० घड़ी एक नक्षत्र भोग०	बुध २१ दिन राशि पर रहता है	बुध०
गुरु ४३ दिन २० घड़ी एक चरण [illegible]	गुरु ५ मास १३ दिन एक नक्षत्र पर रहता है	गुरु १३ मास एक राशि पर रहता है	गुरु०
शुक्र ७ दिन ३ एक चरण पर रहे है	शुक्र १२ दिन एक नक्षत्र को भोगता है	शुक्र २७ दिन एक राशि पर रहता है	शुक्र०
शनि ३ मास १० दिन एक चरण	शनि १३ मास एक चरण पर रहता है	शनि २ वर्ष ६ मास एक राशि पर रहता है ॥	शनि०
राहु २ मास एक चरण को भोगता है	राहु ८ मास एक नक्षत्र को भोगता है ॥	राहु १८ मास एक राशि पर रहता है	राहु०
केतु २ मास एक चरण पर रहता है	केतु ८ मास एक नक्षत्र पर रहता है	केतु १८ मास एक राशि पर रहता है ॥	केतु० ग्र० है०

गैतव्यरासे: फलदाय हा। अगली राशि पर जाणे से पहले ग्रह फल देते हैं ॥

सूर्य ५ दिन पहले ही शुभाशुभ फल देता है ॥ अगली राशि पर जाने से

चंद्रमा ३ घडी पहले

मंगल ८ दिन पहले

बुध ७ दिन पहले

गुरु ३ महिने पहले

शुक्र ७ दिन पहले फल दे ॥

शनि ६ मास पहले फल देने लग जाता है ॥

व. ज्या. सार में यह वाक्य लिखा है कि कृष्ण पक्ष में १।५। १०। तिथि में चंद्रमा शुभ होता है और शुक्ल पक्ष में ४।८। १२। १४ तिथि में चंद्रमा शुभ होता है ॥

[illegible]

राहु ३ मास पहले

केतु ३ मास पहले

१२ द्वादश चंद्रमा का विवाह में दोष नही है यह वाक्य लिंग पुराण में लिखा है

अंध वधिर लग्न का लिंग पुराण में वर्जित है अन्यत्र शुभ है ॥

घात चंद्रमा का भी विवाह में दोष नही है ॥ यात्रा में घात चन्द्रमा वर्जित है घात वार घात मास घात नक्षत्र घात तिथि घात लग्न यह सब यात्रा में वर्जित है यह वाक्य सारणी ग्रन्थ में लिखे है ॥ श्री

चंद्र [illegible] ३ घटी ॥ [illegible] ३ घटी ॥

लिंग पंचतत्व [illegible]

॥अथ चैत्रवालस्य प्रविचारः ॥ग्राम राशेः
गणे चन्द्रे पत्र तिष्ठति चंद्रमा सग्रहेण
मेलितं नं कृत्वा ने दभाग गं सभा चरे
त त्रिभे कं आगं चैव द्वितीयं सप्त
शौरके ॥१॥ भाषाटीका ॥ जिस
दिन चैत्रवालका सोना आगना
देखना हो तो इस प्रकार देखे
ग्राम कि राशि से जिस दिन सोना
आगना देखना हो उस दिन के चं
द्रमा को गिने और पंक आवे
उसमे सात और मिलावे ४
चार का भाग देवे जो शेष बचे
तिस का फल जो १ वा ३ ॥ शेष बच
चे तो आगे ता है जो शेष २॥ वा
४ न बचे तो सोना कहना

॥अब भद्री डाघरणी का भद्
ते लिखते हैं ॥ जिस नक्षत्र पर से
वे [illegible] तिस नक्षत्र से [illegible] दिन

देत्र शुभ है ईशानत्रण ३ शुभ है
फेर चार न देत्र शुभ है फेर ३ आ
ठ ८ ३ शुभ है फेर चार शुभ है यह
नक्षत्र विचार कर एक भटो डा घर गागु
स वार शुक्रवार चंद्रवार यह वार होंरि
क्ता तिथि नाहें शुभ तिथि है पंचक नाहीं
स्थिर लग्न होते से मुहूर्त में भटो डा घ
र गा ॥ जो कोई देत्रपाल को नवा बनना
मे तो उसका मुख किधर करना ति सके
मुहूर्त लिखते हैं जिस ग्राम में बनवावे उस
ग्राम के वर्ग से देत्रपाल का मुख देखना
तत्राच श्लोकः । गाङ्गेश्वि वैनतेयस्य वि
डालस्यादिखोऽजि मुखं मार्जाया सिंहवर्गस्य
कुकुरस्य मैत्रे तत्के प्रति ग्यां सर्ववर्गस्य वाय
व्यां मूषकस्य च मृगस्य चोत्तरे चैव ऐशान्यां
मेषकस्य च ग्रामाणां च मुखाः प्रोक्ताः वर्गद्वारे
ण स्तु रिमिः मुखस्थाने हि कर्तव्यं ग्रामस्य पा
लकः सदा ॥१॥ इ [illegible] त्रि ग्रामाणां मुखाः ॥ भाष
जो ग्राम का सहर का वर्ग गरुड का होते ग्राम

का मुख पूर्व कि तरफ [illegible] ना उसी

तरफ उसी दिशा मे क्षेत्रपाल का मुख करना जो ग्रा
म का नगर किला व का हो तो ग्राम का मुख अग्नी
कोण मे जाणना ~~कर~~ जिस तरफ ग्राम का मुख
हो उसी तरफ क्षेत्रपाल का मुख करना
जो सिंह का हो तो दक्षिण मे मुख जाणना ॥ जो
मरगे का होतो नैऋत्य कोण मे मुख जाणना जो
सर्प का हो तो पश्चिम मे मुख जाणना जो मूषक
का हो तो वायव्य मे मुख जाणना ॥ गज का
हो तो उत्तर मे मुख जाणना ॥ मिंढे का हो तो ईशा
न्य कोण मे मुख जाणना ॥ इस प्रकार जिस
दिशा मे ग्राम का मुख हो उसी तरफ क्षेत्रपाल का
मुख जाणना करना ॥१॥ सूर्य और मंगल ग्रा
म मे शुभ अशुभ फल देते हैं और शुक्र गुरु सभा
मे फल देते हैं और बुध सदा काल तक रात दि
न तक फल देता है चंद्रमा शनि अंत मे फल दे
ते हैं और राहु केतु भोग अंत मे फल देते हैं ॥ ह
ल चलावने का मुहूर्त लिखते हैं ॥ मुहूर्त मघा
सिसे ग मूल नर्क्षरसि करणे स्वाति पुष्य अनुरा
धा दितिभ पित्र भ मृ ल उद्धिपा मे प्रोक्ता तरण सु
श्रुति शातभ सु चित्रा धात्र मे सार नाहं
र विजत रणि बधीं सम्य रि त ल फु यो

मघा ॥ मृग ॥ हस्त। अश्विनी। स्वाति। पुष्य। अनुराधा
तृ ॥१॥ शतभिषा। विशाखा। रेवती। ... तरा। श्रव
पुनर्वसु। मृ ... धनिष्ठा। शतभि०। चित्रा। रोहिणी ...

नक्षत्रोंमे ऽश्रोरशनि तथा रविवारको तथा मंगलवार कोछो
डकर के ऽश्रोर षष्ठी तिथि को छोडकर हल चलाना
शुभ है ॥ ऽश्रोर रिक्ता तिथि भी वर्ज्य देणी ऽश्रोर संक्रां
ति ऽश्रोर १२ ऽश्रौर ऽश्रमावस्या यह तिथि भी वर्ज्य दे
णी इति हलप्रवाह मुहूर्तः ॥ ऽश्रव हवन करण का मु
हूर्त लिखते है मु॰ चिन्तामणि ग्रंथ का वाक्य लीन्हे ॥
सैका तिथि वार युता कृताप्ता ऽश्रोर शांतिसार मे
ऽश्रोर न॰ ज्यो॰ सार मे यह वाक्य लिखा है ॥ तिथि
वार युतिः सैका वेदभक्ता वे शेष कामू निवासो ऽ
ग्नेर्भूमि रूपे चित्तश्राण विनाशदः ॥ १ ॥ वा
तालेद्विक वृत्तेण धन संचय नाशनम् गुण
नेदनय पतेण भुभू मौ विपुल सौख्यदः ॥ २ ॥
भाषाटीका ॥ तिथि ऽश्रौर वार को जोड उस मे ए
क ऽश्रौर मिलावे उसमे ४ चार का भाग देवे जो
कुछ बचे ० शून्य बचे तो ऽश्रग्नि का वास
ऽश्राकाश मे जाणना तिस का फल धन ना
श करने वाला होता है जो १ शेष बचे
तो ऽश्रग्नि का वास पाताल मे जाणना
तिसका फल धन नाश होना जो ३ तीन
शेष बचे तो ऽश्रग्नि का वास मनुष्य
लोक मे जाणना यह सुख के देने वा
ला है यह श्लोक ऽश्रग्नि के वास चक्र
का विवाह के होम मे न हि विचारणा ।

याचा के हेम मे व्रत के होम मे ॥ नव ग्रहों के
होम मे ॥ यज्ञोपवीत के होम मे ॥ चौल नाम
करन के [illegible] होम मे ॥ महणा के
होम मे ॥ युगादि तिथियों के होम मे इत
ने कार्यों के हवन मे अग्नि चारणामलि
आदि हवन मे भी अग्नि चक्र न
हीं विचारना यह मुहूर्त चिं. ज्यो. सा
र मे भी लिखा है ॥ इति अग्नि वास
चक्रम् ॥ अथ चंद्रमा का वास और
वाहन लिखते हैं मु. चिं. प्रमाण से ॥
सो यह चंद्रमा का वास वाहन यात्रा के मु
हूर्त मे देखना ॥ मेषादि सिंह धनु
षौ नरता: वृषोपि कन्यो च तुला श्व मे
ता: मिथुने च कन्या धनु नरे र वपीता: म
कर श्च कुंभ श्च मीन श्च कुबेरा: ॥१॥
रत्न चंद्रे भवेद्गुडं श्वेत चंद्रे भवेत्सुखं पी
त चंद्रे महालाभम् कृष्ण चंद्रे महद्भय
म् ॥२॥ इति चंद्रवासम् ॥ अथ चंद्र वा
हनम् ॥ नरसवार समारभ्य चंद्रस्तु वा
व दुवेत मवामी [illegible] हूदु गसो वाहन

[illegible]

ज च्यात्ते ॥१॥ हयो हस्ती गर्धभ अश्व उष्ट्रि ह
या धै [redacted] जम्बुकः ६ काको हंस मयूरे र भव
न्त्वते नर वाहनः ॥ इति चन्द्र वाहनम् ॥ अथ धा
माम् ॥ मेष अलि वृश्चिक सिंह इन चन्द्रमा का
रक्त वर्ण जाणना ॥ वृष कर्क तुल इन का
श्वेत वर्ण जाणना ॥ मिथुन कन्या धन इन
पीत वर्ण जाणना ॥ मकर कुंभ मीन इन
का कृष्ण वर्ण जाणना ॥ और रक्त चन्द्रमा मे
यात्रा करे ग्राम जावे तो उद्वेग कलह करावे
सयासते रक्त वर्ण के चन्द्रमा में यात्रा न हो
करणी ग्राम में नहि जाणा ॥ और श्वेत चन्द्र
मा लाभ करावे सुख देवे ॥ और पीत वर्ण
के चन्द्रमा महालाभ के करावणे वाला है ॥
कृष्ण वर्ण के चन्द्रमा भय करावे ॥ इति फल
नर के अक्षरों का से लेकर के चन्द्रमा के नक्षत्र
तक गिणे जो अंक आवे तिसमें नव ९ का भाग दे
वे जो एक शेष बचे तो हय नाम घोडे का वाहन जाण
ना ॥ २ बचे तो हस्ती का जाणना ॥ ३ बचे तो गर्दभ गधे
का जा० ॥ ४ मे सिंह ॥ ५ मे व्याघ्र ॥ ६ मे जम्बूक नाम गादड
का जाणना ॥ ७ काक का जा० ॥ ८ मे हंस का ॥ ९ मे म
यूर मोर का जाणना ॥ यह नव वाहन है ॥ अब फल
लिखते है ॥ घोडे का और गज का वाहन शुभ है
गर्धभ गधे का अशुभ है ॥ सिंह का शुभ है सर्व का
र्य सिद्ध है ॥ व्याघ्र भेडे के मे अशुभ फल होता है ॥
जम्बूक का गादड का बुद्धि नाशकारक अशुभ है ॥ काक का
ध्वांक्ष अशुभ है ॥ हंस का शुभ है ॥ मयूर मोर का शु
भ है ॥ इति फलम् ॥ यह पाना में विचारणा ॥ इति चं
द्र वाहनम् ॥

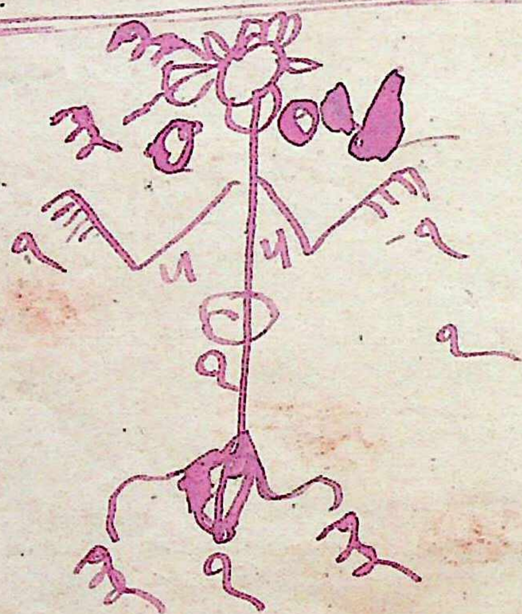
ऽथ शनिवाहनम् ॥ जन्मनक्षत्र से शनि के नक्ष
त्र तक गिने उस संख्यांक में १ और मिलावे फेर उ
स अंक को ३ से गुणा करै फेर उसमें ४ का
भाग देवे जो शेष १ बचे तो गज वाहन जा
नना २ शेष बचे तो अश्व का वाहन जाण
ना ३ बचे तो रथ का वाहन जानना ४ शेष
बचे तो पालकी का वाहन जानना इसीक
म से वस्त्र जानने १ बचे तो श्वेत वस्त्र २ ब
चे तो पीत वस्त्र ३ बचे तो रक्त वस्त्र अन्य बचे
तो श्याम वस्त्र ॥ गजवाहन शुभ है ॥ अ
श्व का वाहन शुभ है रथ का वाहन शोक
कारक है पालकी का वाहन दापकार
क है ॥ इति शनिवाहनम् ॥ श्वेत वस्त्र शुभ
पीत भी शुभ रक्त मध्यम श्याम वस्त्र अशुभ
है ॥ अथ द्वितीय प्रकार शनिवाहनम् ॥
शनि जिस नक्षत्र में स्थित हो वो ही नक्षत्र
और अपने जन्म का नक्षत्र जोड देना तो उस
में माघ से लेकर जो शास्त्र में नहिं ना हो
शनि नक्षत्र तक उस भी उन्हीं नक्षत्रों के अ
क में जोड देना और अंक को आवे उसमें
१० का भाग देवे जो शेष १ बचे तो गज वा

हन २ वन्चे तो जन्म ३ वन्चे तो अक्ष ४ वचे
तो ख्यान प वन्ने तो सिं ह ६ वन्चे तो मीं ह
७ वन्चे तो ख मृ ग ॥ अथ फलम् ॥ गजने
लाभ [redacted] भ जन्म मेव द्विनाश अक्ष मे लाभ
ध्यान मे चोरी होय सिं ह मे सर्व कार्य सिद्ध
श्व म मे हानि होय मृ ग मे प्राण संदे ह होय
हानि होय अथ पानि पादः ॥ जन्म र सेरुद्र
स्व र्णपादः द्विपंच नंद र जतं शुभं चत्रि
स प्तदश ताम्रपादः चतुरष्टम द्वादशा लो
ह मृत्युः ॥ भा वार्थ का ॥ १।६।११ ॥ इन्हेंमे स्व
र्ण का पावां जाणना इसका फल हानि कारक
है ॥ २॥ ५॥ ९॥ चांदि का पावां जांणना इस
का फल शुभ है ॥ ३॥ ७॥ १०॥ तांबे का पावां
जाणना इसका फल शुभ है ॥ ४॥ ८॥ १२॥
लो हे का पावां जाणना सो कष्ट कारक
के है ॥ अब पानि का जरा करु चक्र लिख
ते हैं ॥ पानि जिस नक्षत्र पर हो उस पानि
के नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिण
ना अथवा जमीका नें दात्र की सी कजा
हो तो नाम नक्षत्र से गिणनां जन्म नक्षत्र
जि सा अगर पडे अथवा नाम नक्षत्र

जिसऽङ्गऽगऽवरऽपडे तिसकाफल देखना भु
खमेपडे तो हानि करे बांध ने हाथमे पडे
तो रोगअ करे हृदयमेपडे तो लक्ष्मी प्रा
प्त हो मस्तकमे पडे तो राज्यमिले दहिने
हाथ्यमे पडे तो लाभ चरणमे पडे तो भ्र
मण करावे नेत्रमे सुख गुदामे मृत्यु: कोख
मे शोक तिस निमित्त जपदान करावे ॥

॥ शनि राकार चक्रम् ॥

शनि का दान मध्यमक्रमे करणा लिखा है ॥ चंद्रमा का सांपका तांकोकरणा सूर्य का मात॰



राहु केतु का • अर्द्ध रात्रिमे दान करणा लिखा है ॥

गुरु शुक्र का मध्यमे दान करणा पूर्व क्रमे ॥ मंग
ल का १६ घडी दिन चढे पर करणा ॥ बुध
का १ प्रहर दिन चढे पर करणा ॥
ज्ञान बोध मे शुक्र को संध्या का बाकरा लिखा
रवस्यादि मगांते चपावतिष्ठ तिचे द्रमाता

पुत्रो भवेदंधः संमुखे दक्षिणे शुभः
॥१॥ अर्थ०॥ रेवती नक्षत्र से मृगशिर नक्षत्र तक
६ इन नक्षत्रों में शुक्र अंधा रहता है॥
अंधे नक्षत्रों में शुक्र का संमुख दक्षिण है तो
का दोष नहीं लगता है॥ कोई दोष स्त्री को
संमुख दक्षिने का नहीं लगता है अंधे नक्षत्र

॥अथ यात्रायां वस्त्रापन मुहूर्तः॥ ऊर्ध्व कुंभं तरंग
गः स्वह सीमांतरं भृगुः शरद्दोषं भरद्वाजः
~~वसिष्ठो~~ व अप्रीक्षेण नगराद्बहिः॥१॥ सीमां
तरं तु गर्गस्य त्रिकोणं चैव नारदः। धारयेत्
वास्त्र कौमना पुरु वः स्त्रीयमेव च॥२॥ क्रो
शातु मे चुन रात्रौ प्रभाते योऽभिगच्छति नाप्नोति फल
मवाप्नोति कृच्छ्रेण विनिवर्तते ३॥ कामक्रोधौ त
था लोभं मद्य मांस सदुरोदनम्॥ वमनं च पयः क्षौ
रं तैलं च विवर्जयेत्॥४॥ त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षौरं
पंचाहं क्षौरकर्म चैतद्धि च विशेषेण सप्ताहं
मैथुनं त्यजेत्॥५॥ प्राच्यां महांत प्रनवक्रेवदंति
सर्व यात्रास्वे सदा शुभ फलं निवर्तं हि वं च प्र
न्हे च पक्षिय पदिप्तोक्ति तीनां यव का नांप्र
स्थानके बुधि वस दक्षपंच त रस्या॥६॥
उषः प्रशस्यते गर्गः शाकुनं च बृहस्पतिः प्र
गिराश्च मनोत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः

भाषा टीका ॥ प्रस्थान करने मे गर्गजी का
मत यह है कि अपने घर से दूसरे के घर
मे प्रस्थान करना कहा है और भृगु
जी का मत यह है कि अपने नगर की सीमा मे क
रणा ॥ भारद्वाज का मत यह है के धनुष भर के प्रमाण
प्रस्थान करणा ॥ वसिष्ठ जी का यह मत है के अप
ने नगर से बाहर करणा प्रस्थान ॥ सामान्तर मे
गर्गजी का वी मत है ॥ नारद जी त्रिकोश तीन कोश प
र कहते है ॥ प्रस्थान बाद स्त्री कोई भी प्रस्थान करे ॥ जो
कोई प्रस्थान रात्रि को मैथुन न करे के प्रात का लग्न मे
जाणा चाहे तो नही जाणा जो जाते कष्ट को प्राप्त हो
जा ॥ यात्रा मे काम क्रोध लोभ मोह मद्य मांसादि
और रुदन न करणा न ज देणा और पयनाम दुग्ध
का है दुग्ध पी कर वी नही जाणा ॥ और तेल का प
का अन्न खा कर वी नही जाणा ॥ त्रिगीन रात्रि प
हले क्षौर नही कराबणा ॥ सप्त रात्रि पहले मै
थुन वर्ज देणा अथवा एक रात्रि तो अवश्य ही त्या
ज्य है ॥ पूर्व मे ९ दिन तक प्रस्थान का प्रमाण है
दक्षिण दिशा मे पूरा दिन रहता है पश्चिम मे
तीन दिन तक रहता है ॥ उत्तर मे २ दो दिन रह
ता है यह प्रमाण प्रस्थान का है ॥ घर मे कलह क
र के यात्रा को नही जाणा भार्या से लड कर का
भार्या को ताड कर के वी नही जाणा ग्राम को ॥ व
र्षा व वर्षा मे नही जाणा ॥ व्यतिपात वैधृति संक्रांति
और पूर्णिमा अमावस्या षष्ठी अष्टमी रिक्ता तिथि
रुद्र मे वी यात्रा नही करणी ॥ जिस दिन यात्रा
बडा दूर की जाणी वो मुहूर्त करे उस दिन प्रकाश

प्रकुके घर प्रथम पहर तो दिन चलना द्वितीय दिन ये
जनमात्र ध्रुकोश चलना ॥ अज्जुण के शृंचि सात:
असन्ने प्रिय मान स: दूजितो वध वर्गे ण पात्रा
सर्व नैयोजयेत ॥ इसका नाम के अ न सार चलना
अपने घर आवनेमे प्रस्थान नही करणा ॥ न कुर्या
स्वजन है गु ह न प्रस्थान व कदाचनेति ॥ इसका
कयसे ॥ वर्ष्व अंगारक भौमवार व्यतीपात वैधृति स
पारिजन्मन चन्द्र ह मे पात्रा निषेध है पत मध्यान्हसे
उपर न शुभ हो जाते है ॥ षष्टी द्वादशी अष्टमी पूर्णि
माको अमावस्याको रिक्ता तिथि को प्रस्थान नही करणा
विशाखा जन्म नक्षत्र मे तीनो उत्तरा में मघा आर्द्रा भरणी
आश्लेषा कृत्तिका इन नक्षत्रों मे प्रस्थान न हो
करणा यात्रा भी इन मे नही करणी ॥ उत्तरा हस्त
इन दो नक्षत्रों मे दक्षिण दिशामे नही जाणा ॥ चि
त्रा रोहिणी इन दो नक्षत्रों मे पूर्व मे [illegible] जाणेसे सर्व
कार्य सिद्ध होता है ॥ अश्विनी ॥ अनुराधा ॥ रेवती ॥ मृग
शिर ॥ मूल ॥ पुनर्वसु पुष्य ॥ ज्येष्ठा तथा हस्त यह नक्ष
प्रस्थान मे श्रेष्ठ है ॥ यात्रामे भी श्रेष्ठ है ॥ रो. पू. ३ स्वा
त्रि. श्र. श. ध. यह प्रस्थान के विषे मध्यम नक्षत्र
॥ अब प्रस्थान मे यात्रामे शकुन का विचार लि
ते है ॥ तैल तक्र भुजंग सर्प गज वानर काष्ठ कर्पास
र क्त माला जटाधारी आर्द्र वस्त्र रक्त वस्त्र विधवा
स्त्री रिक्त खाली कुंभ घडा ॥ तिलक वे वीना विप्र
जल वारी ॥ विमुक्त केश छले हुये केश वाला मनुष्य
रंगे हुये कषाय वस्त्र वाला साधु ॥ नग्न पुरुष ॥ कं
ल भग्न चीत ॥ कुब्ज कुबा पुरुष ॥ अंध अंधा ॥ व
ध्या स्त्री ॥ रजक धोबी ॥ मार्जार बिल्ला ॥ कलह
रजः स्वला स्त्री अकाल वृष्टि ॥ अवंड वाप ॥

ाचास्त।। तुष।। वर्म।। तवण।। जड।। प्रस्थि।।
नपुंसक हो जड।। ओषधी।। रिक्तशत्रुः।।
वेटवेष्टप।। रोगी।। जारेल मंड।। उन्मत्त।।
यह जो प्रस्थान के समय में यानि यात्रा के
ग्राम के जाने में जो दृष्टि में आजावे मिलजा
वे सन्मुख तो सकल कार्य की हानि होती
है यह हानिकारक है रोगकारक भी है।।
अपशकुन है ईन्ह में शकुनों में यात्रानि
षिद्ध है।। परु वाक्य वस्त्रखंड अंपानरोसेसार
निकाल कर कतिस्व है।। शकुन व शी
तराज ग्रे य के अन सार वाक्य है यह।।
अथ शुभशकुनानि लिखते।। भेरी मृदङ्ग मृदुम
दंल शंख वीणा वेद ध्वनी मधुर मंगल गीत घोषा
पुत्रान्विता च युवती अरभोस वत्सा धौता म्बरश्च
रजको विमल श्च प्रशस्ता।।१।।रत्नानि वाजीवार
रूप तो नृप दध्यो चपप्यो पध यं ... बवे
नरपति नृत्त न धण व मेव मांगल्य दारसु कुम
म्युता।।२।। प्रज्वलत्त सवत्सा व वज गौतुरगो
दध्दीपणवर्त विग्र दीव्यस्त्री पूर्ण कुंभं नपुष
जगती काशी चमप न घृत वा दधि स गहे
का चने स व तथा नचंद्र छत्र स्थ ध्वजा पठिवा फल
मिव सगहेत मान वो गनु का मः ३।। विप्रं जा पूर्ण
कुम्भमु दधि च कलके कुसुम पावको वा कुम
री द्रु पुत्रैवे वपद्वीनर पति व यभा मृतो

...सा·ध्वजग्रस्य याने सम्पूर्णभाराई चल
...र पुष्य मघ्वि हू म न्वं श्रुताप ॥४॥ वेश्यास्त्रीमां
...भारं व जर्हितव वुनं प्राप्यितं मंगलानाम्
...धाजय दूर्वी चातपूर्णं कुंभ सिद्धान्तसिद्ध
...र्धक वंदनानि आदर्शपांखा मिथमम्पू
...गजरो चनाजय मय जोमधूनि ॥५॥ गीर्वाण
वीणा कुलभद्रपीठा उबांगना लं करण बुधानि
...प्रंभोजभं गारसभृत्यनहि गआमिवा जे कुशचामरणाद्
हितनचनजरणां मांसभारं हलबादि ...कुशमक
लत्रिबाणां दर्शनं चाग्निदीव दधिरजक सवस्त्रां
सन्मुखं सिद्धमनं भवति गमनकाले सर्व का
मार्थसिद्धिः ॥१॥ अथ भाषा शकुनमाह ॥ द
हिने चील्ह मिलै खर बावें सन्मुख गो मिल
एक कागकों आवदश कार्य होजाव ॥
तं दिक बाकहु डाघीघडा पुरुस ... बिहै
नोनार तिलक विहोना विज बस्या और
ने बां चों त्य जे पुराण ॥ पहला गाम में
स्थान में त्याग देने ॥ इति भाषा शकुन
म् ॥ मंगल कौ मही बोमोल न हिं लेनी रवि वा
र को घोडी नहिं लेनी बुधवार को
बलबैल नहिं लेना शनि को ऊंट

युग को प्रमाण जानहिं लेनी ॥ अथ यु
गानां प्रमाणं सत्ययुग त्रेतायुग द्वापरयु
ग कलियुग इन के प्रमाण को लिखते
हैं ज्योतिःसार ग्रंथे ॥ द्वात्रिंश
द्धः सहस्रो युक्तं लक्षं चतुष्टयं प्रमा
णं कलिमर्बाणाब्धोक्तं पूर्वैं महर्षिभिः
॥१॥ युगानां कृतमुख्यानां क्रमात्मा
नं प्रजायते कलेर्मानं क्रमान्निघ्नं च
तु ४ स्त्रि ३ द्वि भिते सदा ॥२॥ कलिप्र
माण को चार गुणा किया तो १७२८
००० भये यह कृतयुगप्रमाण है फेर
कलिप्रमाण को तीन गुणा किया तो
१२९६००० यह त्रेतायुग का प्रमा
ण है फेर कलिप्रमाण को २ गुणा
किया तो ८६४००० यह द्वापरप्र
माण है और कलियुग का प्रमाण
४३२००० का है ॥ इति युगांप्रमाणं

अथ प्रथम मासादि दंतजन्म फलम् ॥ बालक के
जो प्रथम पहले ही महीने मे आद लेकर के जो रण से म
हीने मे दंत दांद जामे तिनका फल लिखते है ॥ अ
नुक्रति चिन्तामणी मे लिखा है ॥ प्रथम मास स्वयं वि
नश्यति ॥ जो बालक के दांद पहले महीने मे जो म
जावें तो वो बालक मृत्यु को प्राप्त हो जावे प्रश
न है शान्ति सार ग्रंथ से शांति करणी चाहिये ॥
द्वितीय मास मे कनिष्ठ भ्राता की हानि होती है ॥ तृतीयमा
स मे जो दंत जामे तो ज्येष्ठ भ्राता की हानि हो ॥ चतुर्थमा
स मे माता की हानि हो ॥ पंचम मास मे ज्येष्ठ [illegible]
भगिनी ॥ षष्ठ मास मे अतुल भोग होता है ॥ सप्तम
मास मे पिता से सुख होता है ॥ अष्टम मास से सुख
प्राप्ति हो ॥ नवम मास मे पुत्र फल होता है ॥ दश
म मास मे शुभ फल होता है ॥ इति पंचम मा
स तक अशुभ फल को दूर करणे के वास्ते करणी
चाहिये ॥ इति दंत जन्म फलम् ॥ अथ मूल नक्ष
त्रे जन्म ने पाद फलम् ॥ अब मूल ज्येष्ठा अश्ले
षा इन नक्षत्रों मे जो बालक का जन्म होवे तिस
का शुभाऽशुभ फल लिखते है ॥ मूलाद्य चरणे
तातो द्वितीये जननी तथा तृतीये तु धनं नश्ये च
तुर्थोऽपि शुभावहः ॥ द्वितीयप्रकारेण पाद फल
आद्ये पिता नाशमवेति मूल पाद द्वितीये जननी [illegible] पश्चा
त् तृतीया धनं चतुर्थोऽस्य शुभो भविता मम् ॥ मूल न
स्या सर्वत्र सत्स्या दोहि भविता मम्
क्षत्र के प्रथम चरण मे जो बालक जन्मे तो पिता को
नष्ट करे ॥ जो मूल के द्वितीय चरण मे जन्मे
तो माता नष्ट हो ॥ तृतीय चरण मे जन्मे तो धन
का नाश हो चतुर्थ चरण मे जन्मे तो शुभ है ॥ प्रथम

ऌषा नक्षत्र मे जो बालक प्रथम चरण मे
जन्म लेवे तो शुभ है ॥ द्वितीय चरण मे ध
न का नाश हो ॥ तृतीय चरण मे माता का
नाश हो ॥ चतुर्थ चरण मे जन्मे तो पिता
का नाश हो ॥ ज्येष्ठा के आद्य चरण मे बाल
क जन्मे तो अग्रज ज्येष्ठ भ्राता को नष्ट क
रे ॥ द्वितीय चरण मे कनिष्ठ भ्राता को न
ष्ट करे ॥ तृतीय चरण मे जन्मे तो माता
को नष्ट करे ॥ चतुर्थ चरण मे स्वयं पि
नश्यतु अपने आप ही नष्ट हो जाता है ॥
अब बालक के जन्म समय मे अभुक्त मू
ल का ज्ञान लिखते है ॥ ज्येष्ठान्ते घटिका
युग्मं मूलादौ घटिकाद्वयम् अभुक्तमूल
मेतत्स्यादित्येवं नारदोऽब्रवीत् ॥ वसिष्ठस्तु ॥
तयोरंत्याद्ययोरेक द्विनाडिकम् ॥ अंगिरा घटिका
मेकामन्ये षट् चाष्ट तन्त्र तु ॥ जातं शिशुं त्यजेत्ताते
न पश्येद्वाष्टहायनम् ॥ वसिष्ठजी के मत मे ज्येष्ठा
के अंत की १ घटि मूल के आद्य की २ घटि अभुक्त
मूल होता है ॥ अंगिरा के मत मे ज्येष्ठा के अंत
की १ घटि मूल के आद्य की १ घटि अभुक्त मूल
है ॥ अन्य के मत मे ज्येष्ठा के अंत की ६ घटि मू
ल के आद्य की ८ घटि अभुक्त मूल की है ॥ इस
मे बालक का जन्म हो तो अष्ट वर्ष तक बालक
का मुख पिता न ही देखे और शांति सार शांति
मयूख आदि ग्रन्थ से शांति करावनी चाहिये

न: अभुक्त मूलम्॥ मूल के प्राधकी घटि ४ ज्ये० नक्षत्र के अन्त की ४॥ नारदमतेन मूलादि घ० २ ज्ये० के अन्त की ४ वसिष्ठ मतेन मूल के प्राध की १ ज्येष्ठा के अंत की १ अभुक्त मूल है॥ गर्गमते न॥ मूल के आध को ८ ज्येष्ठा के अन्त की ५ अभुक्त मूल है॥ अन्यमतेन तत्र जातं शिशुं त्यजेत्॥ पिता तन्मुखं न पश्येत् वर्षाणि न पश्येत्॥॥ ज्येष्ठा नक्षत्रस्य दश विभागा कर्तव्याः तेषां फलानि॥ प्रथम चरण मे मातामही का नाने का नाश होता है॥ द्वितीय चरण मे माता महना ने का नाश करे॥ तृतीय चरण मे मातुल का नाश॥ चतुर्थ चरण मे माता का नाश हो॥ पंचम चरण मे अपने आप ही नष्ट हो जाता है॥ षष्ठ मे स्वजाति यों का नाश हो॥ सप्तम मे कुल का नाश॥ अष्टम भाग मे ज्येष्ठ भ्राता का॥ नवमम श्वशुर का नाश॥ दशम भाग मे धन का नाश होता है॥ इति ज्येष्ठा दश भाग फलम्॥ अब पत्र के जन्म का निषिद्ध काल और भी कहते है॥ प्रथम नी मघा रेवती इन मे जन्म हो पुत्र। यह गंड के नक्षत्र है॥ मूल ज्येष्ठा श्लेषा अश्विनी मघा रेवती यह गंड है इन मे शान्ति करणी॥ तिथि गंड लग्न गंड नक्षत्र गंड यह तीन गंड है शांति करणी॥ मू० ज्ये० श्ले० इन मे तो शांति जरूर ही करणी चाहिये म० रे० अश्विनी इन मे स्वल्प शांति करनी

... २६ ...

पि गंड नक्षत्र गंड लग्न गंड उन में शांति
यथा शक्ति करणी चाहिये ॥ और शूल पात प
रिघ वैधृत इनके योगों में ॥ और संक्रांति के दिन
और अमावस्या चतुर्दशी पर मे चंद्र के योग
... पर योग मध्ये इनके विषे
जो जन्म होतो वी शूद्रय शांति करादेणी
चाहिये ॥ पिता के ज्येष्ठ भ्राता के जन्म न
क्षत्र के विषे जो जन्म हो जावे तो वी शांति
करादेणी शूद्रय यथा शक्ति मात्र ॥ इति मूल
जनन फलम् ॥ अथ संक्रांति निर्णयः ॥ स
र्व संक्रांतीनां रात्र्यर्द्धात् पूर्वे पूर्व दिन मध्याह्नो
त्तर परार्द्ध ... मध्ये परार्द्ध ॥ सर्व संक्रां
तिषु अर्द्धरात्रतो ऊर्द्ध संक्रांत पूर्वे दिने मध्याह्नोत्तर ॥
अर्द्धरात्रतः ऊपरि परदिने मध्याह्न ... और
के पुण्यं ॥ पूर्णे अर्द्धरात्रे दिन द्वयं पुण्यं ॥
उक्तं च नरसिंहेन ॥ पूर्णे चेदर्द्धरात्रे तु यदा
संक्रमते रविः प्राहुर्दिनद्वयं पुण्यं मु
क्त्वा मकर कर्कटौ ॥ १ ॥ भाषाटीका ॥ वृ
ष ॥ मिथुन ॥ सिंह ॥ कन्या ॥ वृश्चिक ॥ धन
कुम्भ मीन इन संक्रांतियों का अर्द्ध रात्रि
से पहिले जो अर्क होता पहिले दिन म
ध्याह्न से उपरंत पुण्य काल ...

[illegible]

और तुलमे ष की संक्रांति अर्द्धरात्रिसे
पहिले अर्के तो पहिले दिन मध्यान्हमे
तिन्हका पुण्यकाल जाणना और सम
ऋषियों का मत तो अब यह है के कर्क
मकर कि संक्राति के बिना और स
भ संक्रातियों का अर्क जो अर्द्धरात्रि
से पहिले आदि न हो तो पहिले दिन के मं
ध्यान्ह के उपरंत पुण्यकाल जाणना
और अर्द्धरात्रिसे उपरंत जो अर्क
हो तो परले दिन मध्यान्ह से पहिले
पुण्यकाल जाणना॥ जो अर्द्धपूर्ण अ
र्द्धरात्रि मे हि अर्क हो तो दोनो दिन पहि
ले दिन भी [illegible] ले दिन भी पुण्यका
ल जाणना॥ अब कर्क मकर कि सं
क्रांति का काल विशेष लिखते हैं॥
अथ कर्कमकरयोर्विशेषः॥ अर्द्धरात्रित
उपरि प्रातःसंध्याया अर्वाक् कर्कसंक्र
मणे पूर्वदिने पुण्यं॥ अर्द्धोदयात्सर्व
त्रिनाडीमिता प्रातः कर्कसंक्रमणे परदि
ने पुण्यं॥ भाषा॥ जो अर्द्धरात्रिसे उपरंत
प्रातःसंध्या से पहिले जो कर्क की संक्रांति

मर्के तो पहिले दिन पुण्य काल ज[illegible]जा
णना॥ प्रातः संध्या नाम किसका है॥ मर्को
दितार्क बिंबात्पूर्वं त्रिघटी प्रमिता प्रातः
संध्या तथा॥ मर्कोस्तादर्कबिंबादुपरि
त्रिनाडी प्रमिता सायं संध्येत्यर्थः॥
स्कन्दपुराणेपि॥ उदयात्प्राक्तनी संध्या घटि
का त्रयमुच्यते॥ सायं संध्या त्रिघटी कास्तादु
परि भास्वतः॥१॥ भाषा॥ सूर्योदय से पहिले
त्रि तीन घडी प्रातःकाल की संध्या की जाणनी
और सूर्य के अस्त पश्चात तीन घटी सा
यं संध्या की जाणनी॥ सूर्योदय से पहिले जो
तीन घडी प्रातः संध्या की है तिन्ह में जो
कर्क की संक्रांति मर्के तो परले दिन पु
ण्य काल जाणना॥ यदि सूर्योदया
त्पूर्वं कर्कसंक्रमणं स्यात् तदा पूर्व दिन
एव पुण्यकालो न परदिने तदाह वृद्ध
गार्ग्यः॥ यदा समयवेलायां मकरे या
ति भास्करः प्रदोषे चार्द्धरात्रे वा स्नानं दानं
(मुहूर्तेऽरुणफले)
परेऽहनि॥ अर्द्धरात्रे तदूर्ध्वं वा संक्रांतौ
दक्षिणायने पूर्वमेव दिने ग्राह्यं यावन्नो
दयते रविः॥२॥ भाषा टीका॥ जो सूर्योदय से
संध्या काल को तीन घडी से पहिले के

कर्क की संक्रांति आवे तो पहिले दिन पुण्य
काल जाणना परले दिन नहीं जाणना और
सूर्य के अस्त से उपरांत प्रदोष के विषे
अथवा अर्द्ध रात्रि के बिचे जो मकर
की संक्रांति आवे तो परले दिन स्नान दान
पुण्यकाल जाणना इसी प्रकार अर्द्ध रा
त्रि के विषे अथवा अर्द्ध रात्रि से उपरांत
सूर्योदय से पहिले जो कर्क की संक्रांति
आवे तो पहिले दिन पुण्य काल जा
णना ॥ जो प्रदोष के विषे अथवा अ
र्द्ध रात्रि के विषे मकर की संक्रांति
आवै तो प[illegible]ले दिन पुण्य काल जा
णना यह अर्थ प्रदीप मय ने लाया
मूई स्लोक का है ॥ और कर्क
त्वरितं यम गं संक्रमते रवि: प्र
दोषे वार्द्ध रात्रे वा कुर्यात् पूर्वेऽहनि
[illegible] ॥१॥ इस स्लोक का लिखा है ॥
अब प्रदोष किसको कहते हैं यह
बात लिखते हैं ॥ त्रिमुहूर्तः प्रदोषः

स्याद् ग्रासस्संगतेसति ॥ ४ ॥ भा.भा.दे.प

टीका एक मुहूर्त होताहै एसे तीन मु

हूर्त याने छह घटी सूर्य के अस्त

से पीछे तक प्रदोष होता है याने छह

घटी रात्रि गई तक प्रदोष होता है

यदि उदयसंध्यातः प्राक् कर्कसंक्र

मस्तदा प्राग्दिन एवपुण्यकालो नो

त्तरदिने ॥ तथा यदि अस्तसंध्यामति

क्रम्य मकरसंक्रांतिस्तदोत्तरदिन एव

पुण्यकालो नतु प्राग्दिने ॥ इति

निर्णयो ऽर्थः ॥ भा.भा.टीका ॥ यदि जो

उदयसंध्यातः याने प्रातःकालकी सं

ध्याकी तीन घटीयों से पहिले कर्क

की संक्रांति अवै तो पहिले दिन पु

ण्य काल होता है पर ले दिन नहीं हो

ता है ॥ तथा तिसी प्रकार यदि जो अ

स्तसंध्या सायंसंध्याकी तीन घटीयों

से उ ... त मकर की संक्रांति अवै

तोउत्तरदिन परलेदिन प्रलयकाल होगा॥ भतुमा
जिने पहिले दिन नहीं होगा॥ यह सम्पूर्ण स
मवाक्य मुहूर्तचिन्तामणी पीयूषधारा टीके
के है॥ मिताक्षरीपटीकामेभी यही वाक्य लिखे है
इति संक्रांति निर्णयः॥ अथ अर्द्धोदय योग
को लिखते हैं॥ माघे मासि रवौ दर्शे व्यतिपाते
श्रवणान्विते अर्द्धोदयाभिधो योगो सूर्यपर्वशत
ताधिकः दिवा नैव रात्रौ योगो वे किंचित्
न्यूनमहोदयम्॥१॥ भाषाटीका॥ माघके म
हिने मे और रविवार की अमावस्या
हो और श्रवण नक्षत्र हो व्यतिपात यो
ग हो तब अर्द्धोदय योग जानना य
ह पर्व सूर्य के ग्रहण से भी अधिक है
इस मे स्नान दान करने का विशेष म
हात्म है अब महंवारणी पर्व लिख
ते है॥ [struck out] चैत्रे कृष्णत्रयोदश्यां श
नौ वारे शतभिषा यदि गासणीति समा
ख्याता सूर्य कोटि [struck out] ग्रहैः
समः॥ अथयोगसनाजकासामहं

[illegible]

वारुणी स्न ता ॥१॥ भाषाटीका ॥ चैत्र के म
हिने की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी जो श
निवार की हो और शतभिषा नक्षत्र हो
और शुभ योग हो तो महा वारुणी योग
जानना इस मे गंगा जी के स्नान दान
का विशेष महात्म है ॥ इति वारुणी
पर्वः ॥ अब गज छाया योग लि
खते हैं ॥ कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां मघा
स्विन्दु करे रवौ यदा तदा गजच्छाया
श्राद्धे पुण्यैरवाप्यते ॥१॥ अन्यच्च ॥ हं
से हंसस्थिते यत्र अमावस्या करान्वि
ता सा ज्ञेया कुंजरच्छाया इति बौधाय
नोब्रवीत ॥२॥ भाषाटीका ॥ आश्विन
कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मघा नक्ष
त्र हो और हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो त
ब गज छाया योग होता है यानतु ग
ज छाया योग रहे तान तु काल न तक
वालतो को भोजन न नहि करता जो
अमावस्या को हस्त नक्षत्र हो और

रर ये भी ह स्नान दान पर हो तन भी ग्रहण
चूडामणि योग में ही होता है इसमें जब दान
करने का बड़ा महात्म्य है पर गुजरा
तीनों को और दत्ती य वैश्य को ग्रहण चूडा
मणि योग में भोजन नहिं करना यह तो की
प्रायश्चित्त ते दुक्षोंवेर भी लिखा है
इति ग्रहण चूडामणि योगः ॥ ग्रहण
निर्णयः ॥ पूर्णिमा प्रतिपत्संधौ राहुसं
पूर्ण मंडलम् ग्रसते चंद्रमर्कं च दर्श
प्रतिपदंतरम् ॥१॥ तत्र संधौ पर्वणी
तिथो भागः स्पर्शकालः प्रतिपदाद्यिमो
भागो मोक्षकालः एतावान् मिश्रित
कालो ग्रहणे पुण्यतमः ॥ पूर्णिमा में
जो प्रतिपद आजावे तब ग्रहण हो
ता है पूर्णिमा प्रतिपद कि संधि के
विषे पर्व के अन्तभाग में स्पर्शकाल
होता है प्रतिपद के आद्य भाग में
मोक्ष का न हो ता है ॥ सर्वग्रास मे

षष्ठ मास अर्द्ध मास मे तीन मास बाद
मास मे एक मास अस्त मे पहिले तीन
न मास अस्तोदय मे पीछले तीन मास
और किसी ऋषि के मत मे अर्द्ध मास
मे ७ दिन तीन पहिले तीन पीछले
एक १ वर्तमान दिन वर्जदेना मुख्य बा
कृत तो मुहूर्त चिन्तामणि मे तीन दिन बा
एक १ दिन गहण का शुभ कार्य मे वर्ज
देना इति ग्रहणनिर्णयः॥ जिस पक्ष मे
कोई द्विज का उच्छिष्ट भोजन द्विज भ
क्षुणा मासमास मे करण वो ह
सतपक्ष होते हैं उनसे रहित शुभ सत
पक्ष है॥ येषां शूद्राणां द्विज भक्षणमाद्वि जो ब्रि
वं भोजने मासि मासि भवेद् अन्नं चेत सद्ध्या॥
प्रमन त्रयोदश ते संप्रमन का जो पक्ष हो जावे तो उस
मे शुभ कार्य नही करणा॥ उक्तं च मुहूर्त मार्तण्डे
त्रयोदश दिने पक्षे विवाहादि न कारयेत गर्गादि मु
नयः प्राहुः कृते मृत्युर्भवाप्नुयात॥१॥ उपनयनं वा
ण पनस्य वेश्मारंभ गर्भ ऋणक मेरुगीया ना द्विजपप
कुर्वीत्न जो गोवीथ बुधः॥१॥ प्रवगवादि मे
सवनिषेध लिखते हैं जो जो सिंह के सूर्य मे आवे

तो तिसको व्यासको देदेणी जो नहीं देवेगा तो द महिने
न्दृ जो के र खणे वाले को मृत्यु हो जावेगा दुसरी प्र
कार माघ मे [redacted] महीणे प्रोष्ठ पद वार को जो महि
षी व्यावे तब भी दोष है रखणी नही चाहिये ॥ इसी प्रका
र आवण मे घोड़ी व्यावे वा दिन मे व्या जावे तो वो
ह जी व्यासको देदेणी नहीं देजा तो दोष स्वत
क होगा ॥ उक्तं च ॥ श्री नो सिंह गते चैव पस्य
जो संप्रसूय पतं मरणं तस्यानिर्दिष्टं मुषांडिमी
सेन संशयः ॥ दिवा प्रसूता वडवा श्रावणे चाश्विने
षतः माघमासे भद्रे चैव प्रसवे महिषी पदे त्रिहे
जा वः प्रसूप नैस्वामिनो मृत्युदा पका ॥ जंगमे स्था
वरं जातं स्थावरे रवौ ५ प जंगमं तलिन्याति वि प
की दे पनचव्यजमोभवेत् ॥ स्पाजेविना भ्रगे
दानं वा कुर्या चैव शुभं तेभेत ॥ इति गवादि
प्रसव निषेधः ॥ ~~आशमे~~ अथ सम्वत्सर मध्ये
लाभ खर्च वरणनम् ॥ सवर्षी व नवे प्र भूतं त्रिगुणं
धारेण प्रयुक्तं त्ति थि २५ प्रो ष लाभ म्भ लाभं त्रि
गुणं च धारणाप्रयुक्तं त्ति थ्या नवो बं २५ व्यय
नाम नं ति ९ रसा ६ सि थ्यो २५ ग जः ८ शैल
चंद्र २७ नन्देन्दवः १९ स ध्यास्वग २१
दि पा: १० कमाल्लेया स्वादि नो घु वा
६ मे ॥२॥ भाषा टीका ॥ राषी के स्वामिका
ध्रुवांक म व जा न व ग्रें ष राजा का भु
गाँ के जोड दे ना उस अंक को तीन

३ गुणा करना उसमे ५ पांच जोड देना फेर उसमे २५ पंद्रह का भाग देना जो शेष बचे तो लाभ होता है और जो लक्ष्य ग्रा मे उसमे तीन ३ गुणा करे फेर उसमे पांच जोड देना उसमे १५ का भाग देना जो शेष बचे सो ही खर्च जानना ॥ अब ध्रुवां कलिखते हैं ॥ सूर्यां क ध्रु वा ॥ ६ ॥ चंद्रं क ध्रुवा ॥ २५ ॥ भौमां क ध्रुवा ॥ ८ ॥ बुधां क ध्रुवा ॥ २८ ॥ जीवं क ध्रुवा ॥ २८ ॥ शुक्रां क ध्रुवा ॥ २५ ॥ शनै क ध्रुवा ॥ २० ॥ यह सर्व ग्रहां के ध्रुवां क जानिये ॥ तत्रोदाहरण ॥ जैसे मेष राशि का लाभ खर्च देखना है तो इस प्रकार देखे जैसे मेष राशि का स्वामि मंगल है अब मंगल के ध्रुवांक ८ है और और संवत् का राजा शुक्र है शुक्र का ध्रु वांक ॥ २१ ॥ इया दो नौ ध्रुवांक जोडे तो ॥ २९ ॥ हुये इसको तीन ३ गुणा किया ८७ हुये इसमे ५ जोडे ९२ हुये इसमे

२५ का भाग दिया तो लब्ध ७ आवे ह दो
अवचे २॥ वह मेष राशि का लाभ जा
निये ॥ केर लब्ध जो ७ आये हैं उसने
तीन ३ गुणा किया २८ हुये उसमें ५ पांच
होर जोडे २३ हुये उसमें २५ का भाग
दिया बाकी बचे ८ वह मेष राशि का
खर्च जानिये इसी प्रकार से सम
राशियों के जान लेने ॥ इति लाभ खर्च
समाप्त ॥ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा जिस
वार की हो वो ही संम्वत् का राजा जान
ना ॥ जिस वार को मेष की संक्रांति हो
वो ही सम्वत् का मंत्री जानना ॥ जो संक्रां
ति समनक्षत्रों में प्रवर्ते तो तीस ३० मुहू
र्त्त जाननी सो सुभिक्ष के करने वाली हो
ती है जो संक्रांति वह त्त्नक्षत्रों में प्रवर्ते
तो ४५ पेंतालीस मुहूर्त्त जाननी सो
मध्यम फल करती है जो संक्रांति
जघन्य नक्षत्रों में प्रवर्ते तो १५ मुहू

तीआनमी॰ अथ सम बृहत् जघन्य॰ नक्षत्रों को लिखते हैं॰ अथ नक्षत्र चक्रम्॰ सम बृहत् जघन्य चक्रम्॰

समनक्षत्र	बृहत्नक्षत्र	जघन्य नक्षत्र	एक दुसरा प्रकार लाभ खर्च देखने का लि॰ है।
चित्रा मगशिर हस्त अश्विनी पे तीन मूल रेवती श्रवण पुष्य अनुराधा धनेष्टा मघा पूर्वा तीनों यह समनक्षत्र हैं ॥१॥	रोहिणी विशाखा उत्रा तीनों पुनर्वसु यह बृहत नक्षत्र हैं मध्यम फल करें॥ बहुत सुभिक्ष नहीं बहुत दुर्भिक्ष नहीं॥	श्लेषा शतभिषा ज्येष्ठा आर्द्रा स्वाति भरणी यह जघन्य नक्षत्र हैं॥	लाभ व्ययो सं में केवा एक कहिने च कार्य॰ अष्टा के अंक हर अंग शेषांके। फल मादिशेत् नग ७ नेत्रा २ जे चन्द्रो के ली भो विद्धि निमित्त मुं सतंवत्सु तये ते पमु शेषां कैः हानि मादिशेत॥२॥ दोहा॥ लीमेखर च को मेल कर एक हीन कर देत॰ आठ॰ आठमे वाट कर शेषांक फल लेत॥ एक १ दोय ६९ दे सात ७ शेष तब जानो अवलाभ ॥३॥ अ १५।८ तीन चार पांच जो ६ मे [illegible]
सुभिक्ष करें		दुर्भिक्ष करें	

अथ ग्रामस्य ऋण धन विचारः॥ स्ववर्गं
द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण संयुतः अष्टभि
र्हरेत् दृगं यो धिकः स ऋणी भवेत् ॥१॥
भाषाटीका ॥ जो कोई ग्राम मे वसना चाहे
अथवा किसी मनुष्य को अपने पास
रखना चाहे तो उसको का कि इस
श्लोक से देखनी अपने वर्ग को दुगु
णा करना फेर ग्राम के या जो मनुष्य
पास रखना है उसके वर्ग को अप
ने दुगुणा किये हुवे वर्ग मे जोडना
फेर उसमे ८ का भाग देना जो शेष अं
क अधिक वचे तो ऋणी जान
ना जो न्यून वचे तो धनि जाणा
ना फेर ग्राम के वर्ग को जो मनुष्य
अपने पास रखना है उसके व
र्ग को दुगुणा करे फेर उसमे अ
पने वर्ग को जोड देके र ८ का
भाग देदेवे जो शेष अंक
अधिक वचे तो उसको

स्मी आनन ॥ अथ ग्राम वासफलम्

ग्रामो यग्राम वेहदे तदधा स पृ मस्त

के प छ सपृ हृदि सपृ सपृ पादे च ताग्

कः ॥१॥ मस्त के च धनि मानः पृष्ठे

हानि क्षतिर्दुनम् उदरे सुखसंपत्तिः

पादे पर्यटन मनुष्फलम् ॥ भाषा टीका

ग्राम के वंद नमृ १ सात न दोत्र ग्राम के

मस्त कपर दिखी ये और सात १ न

दोत्र ग्राम की पीठ पर देने और सा

तन दोत्र ग्राम के हृदय मे देने

और ८ सातन दृत्र ग्राम के चरण मे

देने ॥ अथ फलम् ॥ अवना मदाग दे

खना जो ग्राम के मस्त क पे पर तो

धनी होय पीठ पे पर तो हानि हो

य ॥ हृदय मे पर तो सुखसंपदा होय और

चरण मे पर तो भ्रमण करावे ॥ अथ

ग्राम राशि विचारः ॥ एक मे सप्तमे ग्रामः ३२

ह हानि ... जतूर्थ ... दादश ... ॥

मयस्थानेम वे सुखमु ॥२०॥ अथ धीआ घामे ॥ प्र
ति नाम राशिसे ग्राम कीराशि एक ही होय
वा सातवीं होय तो शून्य फल कर ॥ तीस
र छठ होय तो हानि होय ॥ और ४।८।१२ वें
होय तो रोग कर ॥ और प्राप्त स्थान सुख
कारक जानने ॥ इति ग्राम राशि विचा
र ॥ अथ योगिनी विचार: ॥ प्रतिपत् नवम्यां चेति
इस श्लोक से ॥ १।९ ॥ को पूर्व में जाननी ॥ ३।११॥
को आग्नेय में ॥ ५।१३॥ को दक्षिण में ॥ ४।१२
को नैऋत्य में ॥ ६।१४॥ को पश्चिम में ॥ ७।
१५॥ वायव्य में ॥ ८ ॥ ३०॥ ए ईशान्य में योगिनी का
वास जानना ॥ अथ योगिनी फलम् ॥ योगिनी
सन्मुखा धृते गमने तु दुःख मृत्यु दा ॥ अथ
भाद्रिशो भाजे नाभे वर्षे पृष्ठ प्रदा ॥१॥
यह वाक्य बहत मुहूर्त सिन्धु के है मुहूर्त चि
न्तामणि में तो यह लिखा है ॥ सन्मुख वो म
गमन सस्ता: एता कचयोगिनी स्यता: तिथय:
सन्मुख वाम गमन प्रभा: किन्तु पृष्ठद
क्षिणगा: शुभा: ॥ मुहूर्त भूषणे तु ॥ प्राच्या
दौ दिशि योगिनी शुभकरि नो सन्मुखे द
क्षिणे पृष्ठे वा दिशि दापि भी निगदिता वा

ॐ

मे सुखार्थप्रदा॥ अनयो वै मध्ये द्वौ राग योवि
राधा पञ्चि:॥ अत्रापि सिद्धान्त:॥ पूर्व
यात्रायां तु योगिनी दक्षिण राग अभा
कस्मात् खड्ग कृत वाके॥ पूर्व
यदि शत्रो: सम्मुखे खड्ग दक्षिण राग हो सो
ती द्वारा धारयतेक वा यदि वज्रजीतिन दाश
त्रो विनिजित्य निवर्तेयते॥ यदि वाम
भागे कुचो वज्रजीति न दा शत्रो: सर्व्वा शत्रु जनको
यो विनिवर्तते॥ व्यापार यात्रा का नु॥ तथा
विना हानि मङ्गल न यात्रायां तु वामे काप्ये मु॥
तथा च वाक्यम्॥ ज्योतिषसार॥ धारातीद्वारण वती
च विद्युत्प्रभा खड्गा कृतिं योगिनीमुद्ददो सं स्थि
तं संगर भ्रमकरी वाङ्मुखायसंदायिनी॥ व्या
पाराय गमेतु मङ्गलविधौ वामस्थितां शंकरी
नानावस्तुकलाकलापजननी दु:खौघसंन
शिनी॥ १॥ ज्योतिर्निबन्धेपि॥ रिपोजयार्थि
नां याने योगिनी दक्षिणे शुभा॥ व्यवहारार्थि
नां याने वामे सस्ताक्षमीरिता॥ १॥ इति सिद्धान्त:॥
यात्रायां चौर वारण मप्यनिंद्य॥ यात्रा॥ या प्रापणे
धातु से यात्रा प्रयोग होता है॥ याति अनया इति य
त्रा॥ यद्वा याति अनेन इति यात्रम्॥ यात्रा त्रिविधा॥
लाभयात्रा १ युद्धयात्रा २ तीर्थयात्रा चेति॥ लाभ
यात्रा में और तीर्थयात्रा में योगिनी वामे शुभ है
और युद्धयात्रा में सन्मुख में शत्रु के पराजय
करणे में [illegible] इति का [illegible]

38

॥ अथ कालचक्र मूयात्राया मु ॥ प्रवक्ते त्तरे वायुदिशा च
॥ अथ कालचक्र मे प्रति च्यां बुध नै ऋते च याम्ये गुरु रिति ॥ रवि
साम मे प्रे मति च्यां बुध नै ऋते च याम्ये गुरु रिति ॥ रवि
वार को उत्तर मे कालचक्र रहता है ॥ सोमवार को [redacted]
ना पव्य मे ॥ मंगल को पश्चिम मे ॥ बुध को नैऋत मे
गुरु को दक्षिण मे ॥ शुक्र को आग्नेय मे ॥ शनि को पू
र्व मे रहता है काल के सन्मुख यात्रा नही करणी ॥
मृत्यु योग मे भी यात्रा नही करणी ॥ मृत्यु कके च दग्धा
दि निन्द्योशस्त भ्यानु जम ॥ पद्म प्र. चि. माती मां
तिरवा है ॥ जो चंद्रमा को ष्ठ होतो मृत्यु क कोणादि दोष
नही लगता है ॥ और यह यात्रा मे ही वर्जित है और
कहीं नहीं है ॥ नन्दा सूर्य मंगले च भद्रा भार्गव चं
द्र यो बुधे जया गुरु रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥
यह योग मृत्यु यात्रा मे ही वर्जित है अन्यत्र नही
है ॥ अर्थ यह है जो प्रतिपदा षष्ठी रविवार को वा
मंगलवार को हो वे तो मृत्यु योग जाणना ॥ और
२।७।१२ यह भद्रा तिथि हो जो यह तिथि सोमवार वा शु
क्रवार को होवे तो मृत्यु योग जाणना ॥ बुधवार को जो
३।८।१३ यह तिथि हो तो मृत्यु योग जाणना ॥ गुरु वा
र को जो रिक्ता ४।९।१४ यह तिथि हो तो मृत्यु योग जा
णना ॥ जो पूर्णा तिथि ५।१०।१५ यह तिथि शनि
वार को हो तो मृत्यु योग जाणना ये मृत्यु योग या
त्रा मे वर्जित है और कीसी कार्य मे नही वर्जित है ॥
अपवादक शास्त्रम् ॥ शनौ चन्द्र ति ॥ चंद्रमा ४।८।१२ वा
हो यह यात्रा मुहूर्त है ॥ चर लग्न मे यात्रा करणी
दिक्शूल सन्मुख दाहिणे वर्जित है ॥ चंद्रमा पीछे वा
मे वर्जित है ग्राम जाणे मे यात्रा मे ॥ सन्मुख अथ
लाभ प्रद दाहिणे सुख संपद [redacted] वाम मे हानि कर्ष
पृष्ठे तो मरण ॥ यह लि. है ॥ इति यात्रा मुहूर्त ॥
 २२।२३ पर्यन्त
चंद्रमा के वस्त्र वाहन

सूर्य के नक्षत्र ॥ कूपे जलम् ॥ त्रमे स्वाद्र जल ॥ इस प्रकार देखना
सू तीन नक्ष ॥ सूर्य भात् ॥

३	३	३	३	३	३	३	३	३
खाद्र	बहु जल	खाद्र	जल नाश:	खाद्र	प्रीत मृ	पथ्य स्वादिष्ट	मिष्ट जल	[illegible] जल

प० कूप चक्र सूर्य के नक्षत्र से देखणा त्रि
सन नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से ती
न तीन नक्षत्रों का फल देखणा जो गणसा
खनन नक्षत्र है जो वो है नक्षत्र सूर्य के
नक्षत्र से तीन तीन के कोठे मे आ जावे
जो स्वाद्र मिष्ट के फल मे आ जावे तो खनन
करणा श्रेष्ठ है जो जल नाश मे वा क्षार फ
ल होवे नक्षत्र मे खनन नहीं करणा य
ह व० प्र० सिन्धु मे चक्र लिखा है ॥

अब स्त्री पुरुष के नूतन नवीन वस्त्र व गहना
पहरणे का मुहूर्त लि० है ॥ और मू० षण घड
ने देणे और पहरणे का मुहूर्त भी लि० है ॥ रोज
मुक्तावली० ॥ अस्ता स्नोन मुहूर्त: ॥ स्त्री नवीन वस्त्र
धारण मु० ॥ ह स्त । चित्रा । स्वाति । अनुराधा । विशाखा । अ
श्विनी । धन० रेवती । इन नक्षत्रों मे और बुधवार गुरुवा
र शुक्रवार इन वारों मे स्त्रीयों को नवीन वस्त्र धार
ण करणे ॥ अथ पुरुष नवीन वस्त्र धारण मु० ॥ रेवती अश्वि
नी । पुष्य । रोहिणी । उत्तरा तीनों । इन नक्षत्रों मे । बुध
गुरु शुक्र इन वारों मे । मीन वृ० मिथुन व मे
इन लग्नों मे पुरुष को नवीन वस्त्र धारण करणे ॥

।।६।।४।।६।।५।।६।। [illegible] ।।५।।

प्रसूतीस्नानमुहूर्त्तं मघौ ॥ रे० उत्रा ३ रो० मृ० ह० स्वा० अ
श्विनी ॥ ५ अ० ८ नक्षत्रोंमे ॥ रविवार भौमवार गु
रुवार ३ इन वारोंमे प्रसूतीस्त्रीको स्नान करावणा ॥
स्नानपान करणेका याने चेची देणेका मुहूर्त्त लि० हे ॥
उ० ३ रे० अश्विनी । पुनर्वसु पुष्य । ७ ॥ हस्ता । चि०
रो० मृ० श्रा० ध० पू० ८ इन नक्षत्रोंमे ॥ और २।३।५।
७।१०।११।१२।१३।१५ इन तिथियोंमे ॥ चंद्रवा
र बुध गुरु वार शुक्र ५ इन वारों मे स्थिर लग्नमे
स्नानपान करणा शुभ है श्रेष्ठ है ॥ रोगमुक्त
स्नानमु० ॥ आश्लेषा । मघा । स्वा० रो० पुनर्वसु ॥ रे०
उ० ३ इन नक्षत्रोंमे रोगीको स्नान न करावणा व
उक्त नक्षत्र हे उनसे रहित जो नक्षत्र हे उनमे स्ना
न करावणा ॥ रिक्ता तिथि मे चर लग्नमे रविमं
गलवारमे रोगीको स्नान करावणा शुभ है ॥
प्रथम भूषण पहनमु० भूषण एकरखावणो पह
रणेका मुहूर्त्त लि० हे ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ स्वाति पुष्य श्रव

३७

ण धनिष्ठा पू० ८ अश्विनी पुनर्वसु उ० ३ तीनो इन नक्षत्रोंमे
बुध गुरु शुक्र इन वारोंमे और रिक्ता तिथि नाहे
और स्थिर है उत्तम मुहूर्त्तके न मा भूषक घडनेका और
धारण करनेका शुभमुहूर्त ॥

हवन करनेका मुहूर्त्त खण्णा भूतोक ज्यो
ति प्रसार मे पत्र १३१ पर है तरणी विद्युन्मा
स्कंदि चंद्रमा: कुज सर ज्ञ विदो तु दके तव: ॥ रविभतो दिन
भगणो चैत्र त्रिमात्र प्रतिरवजं त्रि त्रय त्रितय प्रथम सत र
सद्धिके नदो [illegible]
पति न काइस मे सफल जानि ये प्रथम ३ तीन त्रीणे

अथ विपणी मुहूर्तः भाषा दुकान करने का मुहूर्त ॥
मुहूर्तचिन्तामणौ ॥ रिक्ता भौम घटान् विना च विपणि
र्मित्र ध्रुव क्षिप्रभैः लग्ने चंद्र सिते व्यया ष्ट रहितैः
पापैः शुभैः [illegible] ॥१॥ भाषा रिक्ता तिथि नाहीं
भौमवार नाहीं कुम्भ लग्न के विना स्थिर लग्नमें
करना मित्रनाम अनुराधा और ध्रुवसंज्ञक तीनो
और रोहिणी क्षिप्र नक्षत्र हस्त अश्विनी पुष्य
और श्रवण रेवती चित्रा इनमें करना और लग्नमें
चंद्रमा शुक्र हो और लग्नसे आठवें बारवें को
छोड़ के नाहीं और पापग्रह द्वितीय ३।६।
११ में इन स्थान में हों तो विपणि मुहूर्त को
कहे हैं ॥ अथ दीक्षामुहूर्तः ॥ आ० वि० ३ उत्रा
॥ रे० मृ० रो० अनु० ध० ३ पु० इन नक्षत्रोंमें दीक्षा ते
णी ॥ मार्ग० फा० श्रा० का० मा० ये मास शुभ
हैं ॥ शनि भौम वर्जित है ॥ अथ द्वितीय प्रका
र दीक्षामुहूर्तः ॥ मंत्र स्वीकार रवि चै
वृ [illegible] ख फ त [illegible] प्र दम वेष्ण [illegible]
लाभ [illegible] ज्येष्ठे मरणं [illegible] ॥१॥
यह वाक्य वृ० ज्यो० सार ग्रंथ का है ॥
[illegible] तिथि में स्थिर लग्न में दीक्षा ले तो भी
गुरुमंत्र लेने में [illegible] है ॥

[illegible] और बाद उस का पंचक का मेना है
जो पंचकोंमें [illegible] [illegible] पंचक के [illegible]
जो पांच [illegible] [illegible] उसका पंचक
और जो पंचकों [illegible]

नरपनामुपजीवी न सम्प्रकरोम
नव छेदेत्

नाम चोर प्रकृतिः॥ चोरे प्राण हरा प्राज्ञः प्रचामे
ना च रोहिणी उत्तरा कृत्तिका वारः भानु भौम.
मे स्मृताः१॥ प्राते चोरे हंति गुरुः॥ शुक्रो शुक्र
अनंतरविः आपुरं ज्वर कोहंती सर्वहंति
प्राने स्मृताः॥ राजका पीनि धुकाना नेव
लविशो धनम्॥१॥ मघ पंचक के
प्रमु॥ पंचके मे इतने कार्य न हीं करणे॥ कुंभ
मीन के चंद्रमा का नाम पंचक है॥ कुंभ मीन
गते चन्द्रे प्रेतस्य दाहं दक्षिण दिशि यात्रा
न वीन गृहप्रवेशो विताने का ष्ठ जो मंपादी संग्र
हणं गृहगोपनादी न कारयेत॥१॥पं
चके मरणे दाहे प्रेत शांति विधि म
पंचका स्पर्वे मरणे पंचके दाह सं
प्रेत शांति विधिः शांति नं विधेया
न कार्या॥ रवौ सोम स्थाने अन्यथा
दाहे शान्तिः कार्या॥ प्रेत विधि प्रेत
दाहेन कार्यम्॥ इति पंचक कृत्यम्॥

[illegible] पंचकों में तृण घास न हीं लेणा॥ लकड़ी यां न ही लेणी
[illegible] जा न हीं बुणना॥ घर न हीं छापणा॥ दक्षिण देश में न
हीं जाणा॥ और जो कोई पंचकों में मर जावे उसकी स
पांच प्रेत लेकुशा के वणा कर के उनको उपर उ
न के सपद के तागे बांधकर कपोर पवें जो के आटे
[illegible]
[illegible]
[illegible]

स्पे॰ ४ ग्रस्तिकास्थानमें॥
१॰ म॰ ६ ज॰ रो॰ ह॰ अष्टि॰ माति-भन ८०
३॰ तीनोस्था॰ पहनक्षत्रे ॥ आइतियात्रा
स॰ भौ॰ गुरुस्पहवारहो

यात्रा ३ प्रकारकी है लाभयात्रा १ तीर्थयात्रा २ युद्धयात्रा ३ यह तीन प्रकारकी है॥ लाभयात्रामें और तीर्थयात्रामें तो योगिनीवामे श्रुम लिखि है देखलो और युद्धयात्रामें दक्षिण देखलो श्रुभ लि॰ है॥ और इन तीनो यात्रामें मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधारामें सप्रमाण दोनवामें मुहूर्तचिंतामणि श्रीगणेशाय नमः सम आधुतर है सो रतिथि लगन देखलो और गत घेसेष

इतिज्योतिषशास्त्री लिख्यते भाषा दीन है नवाद॥ पत्र ४० है॥

पत्र	अं	पत्र	अं
यात्राप्रस्थानम्॰	२५	ग्रहणनिर्णयः तत्र स्नानादि॰	३२
यात्राप्रस्थान	२६		
शकुनविचार	२६	त्रिधोदशादिनपदे कार्य्यवर्ज्य गवादिप्रशावप्रांतिः॥	३३
भाषाशकुनयुगानां प्रमाणां	२७		
प्रथममासादि	२८	संवत्सरमध्येला भखवर्चस्नानं	३४
दंतजननविच	२८		
र मूलादिजन्म	२८	प्रथमसमवहत जघन्यनक्षत्रस्नानं	३५
पादगतफलम्	२८		
तिथिगंड नक्षत्रगंड लग्नगं	२९	ग्रामवास ग्रामवासेऋणधनस्नानं	३६
ड संक्रांतिनिर्णयः दोषनि॰	३०	योगिनीविचार	३७
		कालनिर्णयः	३८
अर्धोदययो	३१	मनुष्योगेपियात्रा वर्ज्य जोदेखो	
गवाहरणी॰ गजच्छायानि	३२		

यात्रा देखनेकू पत्र ३९ वा ३८ पर है देखलो यात्रा भाषाकवी है

ग्रसंभ्रत्र कोश्रसन नाहोमेप्रि हेकोचह स्पतनाहो मञवडीया नाहे

मितत्रओगा किंतरोवं सिङ्गाथह मिङुयोगका श्लोकहे॥ जो आतिपदाका नवारकीहो [illegible] योगजाराणाई सप्रकारजोदु जकोरकीहो और तीजभोमवारकी हो और चोथ [illegible] निवारकीहो पंचमीगुरुवारकीहो फेरदसी तम [illegible] रकीहो [illegible]

रवजकरणोकापुह जनमे २८ [illegible]